अक्टूबर-२०१६ ◆ वर्ष ५ ◆ अंक ०५ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०१६

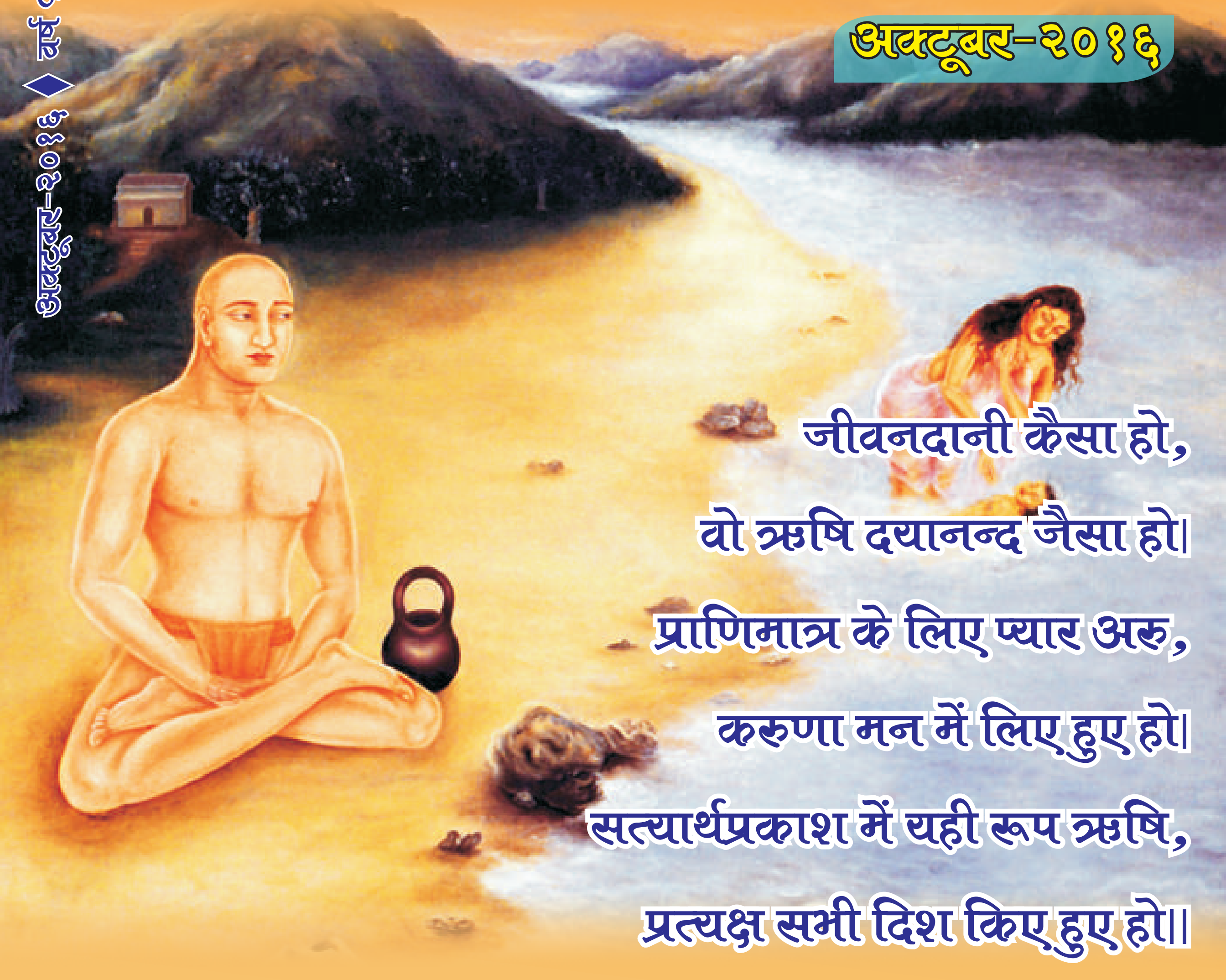

जीवनदानी कैसा हो,
वो ऋषि दयानन्द जैसा हो।
प्राणिमात्र के लिए प्यार अरु,
करुणा मन में लिए हुए हो।
सत्यार्थप्रकाश में यही रूप ऋषि,
प्रत्यक्ष सभी दिश किए हुए हो॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५८

श्रेष्ठ क्वॉलिटी, उत्तम स्वाद,
एम.डी.एच. मसालों में है कुछ बात।
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
Chana masala
Garam masala
Peacock Kasoori Methi
Chunky Chat masala
Deggi Mirch
Sambhar masala
Dal Makhani masala
Shahi Paneer masala
Pav Bhaji masala
Kitchen King
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११७
आश्विन शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत्
२०७३
दयानन्दाब्द
१९२

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

October - 2016

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २५

हलचल २६

०४	वेद सुधा
०७	अग्निहोत्र नित्य कर्म है
१२	स्वामी दयानन्द का वैदिक समाजवाद
१४	समाधान ....
१६	मैं कौन हूँ?
१६	Manusmrti
२१	तन से विदेशी मन से स्वदेशी
२४	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१६
२७	स्वास्थ्य- शहद और स्वास्थ्य
२६	कथासरित
३०	प्रमुखतम राजपुरुषों की योग्यता

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ५ अंक - ०५

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२६४) २४१७६६४, ०६३१४५३५३७६, ०६८२६०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

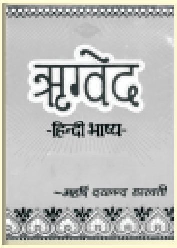

वेद सुधा

त्रिविध महान् ऐश्वर्य

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्।। -ऋ.१/५७/१; अथर्व.२०/१५/१

ऋषिः- सव्य आङ्गिरसः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः- जगती।।

विनय- हे परमदानी! मैं तेरे सामने झुकता हूँ। मेरा मन और बुद्धि तेरे सामने झुकते हैं। तेरे अपरिमित ऐश्वर्यों की जो हमपर अनवरत वर्षा हो रही है उसे देखकर मैं अवाक् और स्तब्ध रह गया हूँ। मेरी बुद्धि तेरी महत्ता, तेरी अनन्तैश्वर्यता को समझ सकने से भी हार मान रही है। तू गुणों में अनन्त है, तू आकार में अनन्त है, तेरा धन अनन्त है और तेरा बल कभी झूठा नहीं हो सकता। तेरा बल जहाँ प्रयुक्त होता है वह अवश्य सफल होता है। तू सच्चे बलवाला है और फिर तू परम दानी है। अपने अनन्त ऐश्वर्य की हमपर इसलिए वर्षा कर रहा है कि उसे पाकर हममें भी बल बढ़े, आत्म-शक्ति बढ़े, हम भी सच्चे बलवाले हो जाएँ। तेरा यह ऐश्वर्य हमारे लिए खुला पड़ा है और यह विश्वभर के लिए खुला पड़ा है, सबके लिए खुला पड़ा है। जो चाहे इसे यथेच्छ लेकर अपना बल बढ़ा लेवे। तनिक देखो, इस ब्रह्माण्ड का स्थूल ऐश्वर्य, अद्भुत मानसिक ऐश्वर्य और अलौकिक

अपार शक्तिवाला आत्मिक ऐश्वर्य- ये सब एक-से-एक ऊँचे, एक-से-एक अधिक शक्ति देनेवाले ऐश्वर्य हमपर बरस रहे हैं। ऐश्वर्य की कमी नहीं है, हमारी ग्रहण-शक्ति की ही कमी है। ऐश्वर्य को लूटो और इससे अपनी शक्ति बढ़ाओ। अरे, यह तो बेरोक-टोक हमारी ओर बह रहा है। जैसेकि नदी का जल नीची भूमि पर स्वभावतः जाता है, उसे रोका नहीं जा सकता, वैसे ही परम प्रभु का ऐश्वर्य उनकी सर्वशक्तिमत्ता और उनकी बृहत्ता ऊँचाई से हम नीचे खड़े अल्पशक्तिवालों की ओर स्वभावतः आ रहा है। यह तो आ ही इसलिए रहा है कि हमारी कमी, हमारी निर्बलताएँ भर जाएँ। प्रभु का ऐश्वर्य-जल हमें भरपूर करने के लिए, हमें पूर्ण कर देने के लिए नीचे अनवरत खुला बह रहा है। ओह! यह अनन्त काल से बह रहा है और इस ऐश्वर्य का कहीं अन्त नहीं है। इसे देखकर हे परम दानी! मैं तेरे चरणों में गिर रहा हूँ- सर्वभाव से तेरे चरणों में गिर पड़ा हूँ। बुद्धि तक मेरा सब-कुछ तेरे समर्पित है, हे महादानी!

शब्दार्थ- यस्य राधः= जिस प्रभु का ऐश्वर्य, प्रवणे अपामिव= नीची भूमि पर बहते पानी की भाँति, दुर्धरम्= दुर्धर है, रोका नहीं जा सकता और जिसका ऐश्वर्य, विश्वायु= सबके लिए, शवसे= सबका बल बढ़ाने के लिए, अपावृतम्= खुला पड़ा है उस, बृहते बृहद्रये= अनन्त गुणवाले और अनन्त धनवाले, सत्यशुष्माय= सत्य-बलयुक्त, मंहिष्ठाय= महादानी, तवसे= महान् प्रभु के लिए, मतिं प्रभरे= मैं अपनी बुद्धि समर्पण करता हूँ।

- आचार्य अभय देव विद्यालंकार
साभार वैदिक विनय

सत्कर्मों से सुख मिलता,
है, संघर्ष से पहचान।
प्रेम, दया और परोपकार,
से पूरे होते सब अरमान।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आपकी अदा ठहरी ये जान से गए

गत वर्ष सिडनी आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जब भ्रमण हेतु गए तो ज्ञात हुआ कि वहाँ एक ई.एम.यू तेल मिलता है जो कई बीमारियों जैसे गठिया आदि के दर्द में तो रामबाण है ही साथ ही उसे नियमित लगाने से त्वचा की कान्ति अपूर्व हो जाती है। गौरवर्ण विकसित होता है तथा त्वचा जवान हो जाती है (यहाँ तक कहा गया कि आप १० वर्ष कम के दिखने लगते हैं) अभूतपूर्व निखार आ जाता है। इतना सुनना था कि हमारे साथीगण भी उसे खरीदने हेतु टूट पड़े।

किसी ने भी यह नहीं सोचा कि यह तेल वहाँ के एक ईएमयू पक्षी को मार कर बनाया जाता है। स्वयं जवान दिखने मात्र की चाह में एक पक्षी को मारने को बढ़ावा मिले यह तो आर्यों की सोच न थी। मुझे स्मरण हो आया जब मेरे से बड़े भाई वेद प्रकाश जी अभी शैशवावस्था में ही थे, कि अत्यन्त गंभीर बीमार पड़े। उस समय मथुरा में चिकित्सा सुविधाएँ अत्यल्प थीं। एक हॉस्पीटल वृन्दावन में था जिसे क्रिस्चियन मिशनरीज द्वारा चलाया जाता था। उसमें भाई साहब को भर्ती कराया गया। डाक्टरों का कहना था कि इस शिशु को एक ऐसी दवा देनी अत्यावश्यक थी जिसमें मछली का तेल मिलाया जाता था। इस पर पिताजी ने कठोरता के साथ निषेध करते हुए कह दिया कि शिशु जीवित बचे या न बचे वह ऐसी कोई दवा देने की अनुमति नहीं देंगे, जिसमें जीव हत्या हुयी हो। तो एक यह चरित्र भी आर्यों का था।

अब जमाना बदल गया है। जीवन रक्षक दवाओं की बात तो छोड़ दें, हम दैनिन्दिन जीवन में कॉस्मेटिक उद्देश्य से भी जिन चीजों का प्रयोग करते हैं उनमें एनीमल-ऑरीजन के कितने ही अवयव मिले रहते हैं, उनका प्रयोग जाने-अनजाने करने से, अगर मनु की बात करें तो हम भी जीव हत्या में भागीदार हो जाते हैं।

स्पर्म व्हेल के पाचनतंत्र में एम्बर्ग्रिस नाम का एक लसलसा पदार्थ कुदरती तौर पर इसलिए बनता है कि अगर कहीं कोई तीक्ष्ण पदार्थ व्हेल के भक्षण में आ जाय तो यह एम्बर्ग्रिस उसके पाचनतंत्र को चोट से बचा ले। यह एम्बर्ग्रिस व्हेल के शरीर से उलटी अथवा विष्ठा के रूप में निकलता है। समुद्र में अधिक समय तक बहते-बहते इसमें लुभाने वाली खुशबू उत्पन्न हो जाती है तथा परफ्यूम्स की खुशबू की उम्र दीर्घ करने के लिए इसका उपयोग महंगे परफ्यूम्स विशेष रूप से फ्रेंच परफ्यूम्स में किया जाता है। अतः फ्रेंच परफ्यूम्स खरीदने से पहले दो बार सोचिये अवश्य।

क्या आप जानतीं हैं कि अपने होठों व नाखूनों को लाल रंग से रंगकर खूबसूरत दिखने के लिए जिस लिपस्टिक तथा नेल पालिश का प्रयोग आप कर रहीं हैं उसमें बेचारे अनेक छोटे-छोटे कीड़ों को अपना बलिदान करना पड़ता है। इन्हें कोचनील कहते हैं। इस कीड़े का जुर्म इतना ही है कि कुदरत ने इसे आत्मरक्षा के लिए जो कार्मनिक एसिड प्रदान किया है उससे कार्मीन रंग बनता है, जिसका उपयोग मानव द्वारा कास्मेटिक पदार्थ तथा खाद्य पदार्थों को लाल रंग से रंगने में किया जाता है। कीड़े से रंग निकालने के अनेक तरीके हैं जिनसे शेड में अल्प परिवर्तन हो जाता है। आपको ज्ञात होना चाहिए कि इस निरीह कीड़े को रंग प्राप्त करने के लिए पानी में

उबाला जाता है अथवा धूप में सुखाया जाता है जिस कारण इसके शरीर से पानी निकलने से इसका वजन कम से कम ३५ प्रतिशत कम हो जाय। फिर इसको पीसकर चूर्ण बनाया जाता है। कार्मीन बनाने के लिए इस चूर्ण को अमोनिया अथवा सोडियम कार्बोनेट के साथ उबाला जाता है फिर फिटकरी से साफ किया जाता है। याद रखिये एक किलोग्राम रंग के लिए एक लाख कीड़ों को सुखाकर उनके शरीर को पीस कर चूर्ण बनाया जाता है। मनुष्य यह सब करता है अपना जीवन बचाने हेतु नहीं, वरन् केवल रंगीन करने हेतु। अकेले पेरु से २५० टन से भी अधिक रंग निर्यात होता है। इसमें कितने कीड़ों को मारा जाता होगा आप ही केलकुलेटर से ज्ञात कर लें और यह अनुमान भी लगालें कि सम्पूर्ण विश्व में मारे जाने वाले कोचनीलों की संख्या क्या होगी। अगली बार जब आप अपने कास्मेटिक चयन करें तो लेबल अवश्य देख लें और यदि कोचनील, कार्मीन अथवा नेचुरल रेड ३ देखें तो समझ जायँ कि इसमें थोड़े कीड़े पीसकर अवश्य मिलाये हैं। E-१२० इंडेक्स भी इसे दिया गया है। अब इसका प्रयोग करना है या नहीं यह आपके ऊपर निर्भर करता है।

घोंघा का नाम आपने सुना होगा। आप अगर महंगी फेस क्रीम का प्रयोग करने वाले संभ्रांत धनाढ्य हैं तो हो सकता इस प्राणी को आपकी सुन्दरता के लिए अपनी बलि देनी पड़ रही हो। घोंघा के अत्यन्त चिपचिपे पदार्थ में ग्लाईकोलिक एसिड तथा इलास्टिन होता है। यह दोनों चीजें सुन्दरता के बाजार में चमत्कारिक कही जाती हैं। अतः एंटी एजिंग क्रीम का अनिवार्य हिस्सा बन गयीं हैं।

स्क्वेलीन नामक तत्व यूँ तो त्वचा का हिस्सा होता है इसी कारण स्किन क्रीम में इसका प्रचुर उपयोग होता है। कास्मेटिक इंडस्ट्री के लिए यह स्क्वेलीन शार्क मछली के लिवर से निकाला जाता है। एक अध्ययन के अनुसार कास्मेटिक इंडस्ट्री के लिए प्रतिवर्ष ३० लाख शार्क मछलियों को मारा जाता है।

कोलेजन एक प्रोटीन होती है जिसकी कमी उम्र वृद्धि की परिचायक होती है। स्किन क्रीम्स में कोलेजन चूजे के पैरों द्वारा प्राप्त कर मिलाया जाता है यदि यह ज्ञात हो तो क्या फिर भी आप उतने ही उत्साह से उस क्रीम का इस्तेमाल करेंगे?

अगर धार्मिक दृष्टि से बात न भी की जाय और 'गाय हमारी माता है, दया धर्म का नाता है' की बात अलग भी कर दी जाय तो भी गाय एक अर्थ व्यवस्था की धुरी है यह सिद्ध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'गौ करुणानिधि' इस तथ्य को प्रमाणित करती है। स्किन क्रीम की इलास्टिन गाय की गर्दन के लिगामेंट्स से निकली जाती है क्या इस कीमत पर अपने को सुन्दर बनाना उचित है?

यह एक लम्बी लिस्ट है। सवाल केवल १ अक्टूबर को शाकाहार दिवस मनाने का नहीं है जीवन शैली का है। हमें सोचना होगा कि हमें क्या अधिकार है अपने स्वार्थ के लिए किसी प्राणी की जान लेने का? बाजार का नियम तो सीधा है जिस वस्तु की माँग है उसे व्यापारी किसी भी कीमत पर उपलब्ध कराएगा। अगर बाजार में चमड़े के जूते जो अत्यन्त मुलायम हों उसकी माँग है तो मासूम जिन्दे बछड़ों को क्रूरता के साथ मारा जाता रहेगा। जब हम जैकेट, पर्स, बैग, जूता, बेल्ट आदि खरीदते हैं तो सबसे पहिला प्रश्न यही होता है कि यह शुद्ध चमड़े का तो है ना? नकली तो नहीं? जब लेदर प्योर चाहिए तो पशु पक्षियों को आपकी प्रसन्नता के लिए अपनी जान देनी ही होगी यह स्वतः सिद्ध है।

प्रसन्नता की बात यह है कि विश्व केलेंडर का एक दिन शाकाहारी बनो का सन्देश भी देता है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य ही परोपकार है। अपने स्वार्थ के लिए अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के पूर्णतः वश में तो पशु-पक्षी रहते हैं, मनुष्य तो विवेकपूर्वक भलाई बुराई में अन्तर कर सकता है और अन्तर करके सबके भले के लिए अहिंसा का पालन उसका परम कर्तव्य है। इसे निश्चय जान प्राणी-मात्र के प्रति मित्रता का भाव रख, उन्हें किंचित मात्र दुःख पहुँचाने से विरत् रहना ही आज के दिन का हमारा संकल्प हो सकता है ।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

अग्निहोत्र नित्य कर्म है

श्रीमती सरोज वर्मा

अग्निहोत्र नित्य कर्म है, जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः और सांय अवश्य ही करना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने शरीर से (मलमूत्रादि विसर्जन, श्वास-प्रश्वास, पसीने-थूँक, स्नान, वस्त्रादि के धोने आदि के द्वारा) दुर्गन्ध उत्पन्न करता ही है, जिससे जल और वायु दूषित हो जाते हैं। अतः उनके निवारण के लिये उतना सुगन्ध वा उससे अधिक सुगन्ध वायु और जल में फैलाना उसका कर्त्तव्य हो जाता है। हम जीवनयापन के लिये आवश्यक नित्य कर्म करते हैं, जैसे सोना-जागना, भोजनादि, शौच जाना, मुँह धोना, दांत साफ करना आदि। इनको करने से मनुष्य को व्यक्तिगत लाभ हैं और नहीं करने से हानि। इसी प्रकार अग्निहोत्र भी एक नित्य कर्म है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य करना चाहिए।

मानव के सम्पूर्ण जीवन में यज्ञ की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए महर्षि मनु ने ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ तीनों के लिए नित्य अग्निहोत्र का विधान किया है- **'अग्नीन्धनं.. ..आसमावर्तनात्कुर्यात् कृतोपनयनो द्विजः'।** (मनु .२/१०८)

यज्ञोपवीत संस्कार में दीक्षित ब्रह्मचारी समावर्तन संस्कार पर्यन्त अग्निहोत्र करता रहे। गृहस्थों को पञ्चमहायज्ञ तो यथासम्भव सदैव करने चाहिए।

'साथ ही प्रतिदिन सांयप्रातः अग्निहोत्र भी अवश्य करना चाहिए।' (मनु . ४/२५)

'वानप्रस्थाश्रम में भी पञ्चमहायज्ञों और अग्निहोत्र से छुटकारा नहीं है।' (मनु ६/५)

शतपथ बाह्मण (१२/४/१/१) के अनुसार-

'एतद्वै जरामयर्थ्ठ सत्त्रं यदग्निहोत्रं,
जरया वा ह्येवास्मान्मुच्यन्ते मृत्युना वा।

अर्थात् - अग्निहोत्र आजीवन करना होता है, इससे छुटकारा शरीर के नितान्त जीर्ण और अशक्त हो जाने पर या मृत्यु के उपरान्त ही मिलता है।

शतपथ ब्राह्मणकार तो यहाँ तक लिखते हैं कि 'अन्य सब यज्ञ तो एक न एक दिन समाप्त हो जाते हैं, अग्निहोत्र केवल ऐसा है जो समाप्त नहीं होता।' मनुष्य सांय हवन करके कहता है कि प्रातः हवन करूंगा। प्रातः हवन करके कहता है कि फिर सांय हवन करूंगा। सो यह अग्निहोत्र अन्तहीन है।

महर्षि लिखते हैं- 'पहले आर्य लोगों का ऐसा सामाजिक नियम था कि प्रत्येक पुरुष प्रातःकाल स्नान कर बारह आहुति देता था, क्योंकि प्रातःकाल में जो मल-मूत्रादिकों की दुर्गन्ध उत्पन्न होती थी,वह इस प्रातःकाल के हवन से दूर होती थी। इसी तरह सायंकाल में हवन करने से दिनभर की जमी हुई जो दुर्गन्ध है उसका नाश होकर रात भर वायु निर्मल और शुद्ध चलती थी। ....उससे भरतखण्ड में वायु शुद्धि के कितने साधन उत्पन्न होते थे ?' (उपदेश मंजरी, यज्ञ और संस्कार विषयक)

वेद में आया है- 'वायु और सूर्य के छेदन, आकर्षण और वर्षा कराने वाले गुणों से नदियाँ बहती हैं (और) होमा हुआ द्रव्य दुर्गन्ध आदि दोषों का निवारण करके सब दुःखों से रहित हितमय सुख को सिद्ध करता है, जिससे कि दिनरात सुख बढता है। जिसके बिना कोई प्राणी जी नहीं सकता, इसलिए इसकी शुद्धि के लिये मनुष्यों को यज्ञ नामक कर्म नित्य करना चाहिए।' (ऋग्.१/३८/८)

होम न करना पाप है

प्राणिजगत् द्वारा मलमूत्रादि विसर्जन, श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया के कारण, पदार्थों के सड़ने-गलने, वर्तमान में धूम्रपान, कल-कारखानों की चिमनियों से निरन्तर निकलने वाले धुँए एवं दूषित पदार्थों तथा यातायात आदि के कारण उत्पन्न प्रदूषण के लिये स्वयं मानव ही उत्तरदायी है। तब उसका निवारण करना भी उसी का कर्त्तव्य है, कर्त्तव्य ही क्यों ये उसका मानवीय धर्म है। अन्य प्राणी भी प्रदूषण को उत्पन्न करते हैं, किन्तु मनुष्य के बुद्धिजीवी होने से शास्त्र ने धर्माधर्म का विधान उसके लिये ही किया है, यह सामर्थ्य अन्य किसी प्राणी में नहीं है। मनुष्य कहते ही उसे हैं, 'जो मननशील हो अर्थात् सोच- विचारकर अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय करता हो।' (निरुक्त३/७)

होम नहीं करने से पाप और करने से चराचर जगत् का उपकार होता है। क्या होम नहीं करने से पाप होता है ? जवाब में महर्षि दयानन्द लिखते हैं-' हाँ, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होके, वायु और जल को बिगाड़ कर, रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिये उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे

अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। .... इसलिये होम का करना अत्यावश्यक है।' (स. प्र., तृतीय-समु., उदयपुर पृ-४३) अन्यत्र लिखते हैं-'ईश्वर ने मनुष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा दी है, इसको जो नहीं करता, वह भी पापी होकर दुःख का भागी होता है। क्योंकि सबके उपकार करनेवाले यज्ञ को नहीं करने से मनुष्यों को दोष लगता है। जहाँ जितने मनुष्यों आदि के समुदाय अधिक होते हैं, वहाँ उतना ही दुर्गन्ध भी अधिक होता है। यह ईश्वर की सृष्टि से नहीं, किन्तु मनुष्यादि प्राणियों के निमित्त से ही उत्पन्न होता है, क्योंकि हस्ती आदि के समुदायों को मनुष्य अपने ही सुख के लिए इकट्ठा करते हैं, इससे उन पशुओं से भी जो अधिक दुर्गन्ध उत्पन्न होता है सो मनुष्यों के ही सुख की इच्छा से होता है, इससे क्या आया कि जब वायु और वृष्टि-जल को बिगाड़ने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यों के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको योग्य है।'

ब्राह्मण ग्रन्थ में एक आख्यायिका है कि एक व्यक्ति मरकर परमात्मा के सम्मुख उपस्थित होकर प्रार्थना करता है कि मैंने जीवन में बहुत दान पुण्य किये हैं, मुझे मोक्ष दे दिया जाय। तभी कुछ देवों के द्वारा वह व्यक्ति अपना ऋणी बताया जाता है। जल देवता का कहना है कि यह जल शुद्ध लेता रहा अशुद्ध कर निकालता रहा। वायु देव का कहना है कि यह शुद्ध वायु लेता रहा अशुद्ध निकालता रहा। इसी प्रकार अन्नादि भी

अशुद्ध किये। इस पर परमात्मा द्वारा उसे कर्मफल दिया जाता है, जिससे उस व्यक्ति को वायु को शुद्ध करने के लिए विषैले जीवों का जन्म लेना पड़ता है। जल शुद्ध करने के लिए जल-जीव बनना पड़ता है। अन्न शुद्धि के लिये वराह आदि बनना पड़ता है। जन्म-मरण का क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक सारे पदार्थों की शुद्धि नहीं कर लेता। इसको शुद्ध करने के लिये जब उस व्यक्ति ने पूछा कि मैं जन्मते -मरते थक गया हूँ, क्या कोई ऐसा उपाय है कि जल, वायु आदि मनुष्य जन्म में ही शुद्ध हो जायँ, तो इसका उत्तर है कि यज्ञ करने से वायु, जल, अन्नादि सभी पदार्थ शुद्ध हो जाते हैं,अतः प्रत्येक व्यक्ति को नित्य यज्ञ करना चाहिए।

वेद में आया है- 'ईश्वर आज्ञा देता है- 'विद्वान् मनुष्यों को पृथिवी में राज्य, त्रिविध यज्ञ और ओषधियों का नाश कभी नहीं करना चाहिए। जो अग्नि में होमे हुए द्रव्य का सुगन्ध आदि गुणों से युक्त धुँआ (है वह) मेघसमूह में पहुँचकर, सूर्य और वायु के द्वारा सूक्ष्म किये गये और धारण किये गये जलसमूह का शोधक होकर इस पृथिवी पर वायु, जल और ओषधियों के शोधन के द्वारा महान् सुख उत्पन्न करता है। अतः वह यज्ञ किसी को भी कभी भी नहीं त्यागना चाहिए। जो दुष्ट मनुष्य हैं, उन्हें इस पृथिवी पर अनेक पाशों से बाँधकर दुष्ट कर्मों से हटाकर कभी भी नहीं छोड़ना चाहिये और आपस के द्वेष को त्यागकर एक दूसरे के सुख की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिए।' (यजु . १/२५)

- ४८७, नमक की मण्डी
किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)
चलभाष- ०९४१३४१८५२९

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी।अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

ऋषि निर्वाण दिवस पर विशेष

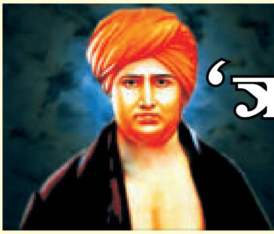

'ऋषिवर देव दयानन्द की राष्ट्र को देन'

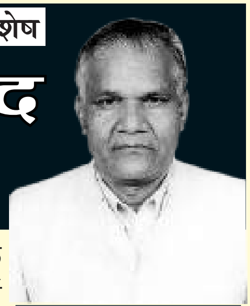

खुशहाल चन्द आर्य

ऋषिवर देव दयानन्द से पहले आदि शंकराचार्य व वल्लभाचार्य से लेकर आधुनिक आचार्य करपात्री तक जितने भी आचार्य हुए हैं उनमें बुद्ध, महावीर, नानक, ईसा, मोहम्मद आदि भी आ जाते हैं, इन्होंने केवल अपने ही मत, पंथ, सम्प्रदाय का प्रचार किया। अपने ही मतावलम्बियों का हित चाहा और उन्हीं को बढ़ावा दिया। राष्ट्रचिन्तन, राष्ट्रप्रेम व राष्ट्रहित के सम्बन्ध में किसी ने दो शब्द भी नहीं कहे। भारत के इतिहास में केवल देव दयानन्द ही एक ऐसे धर्माचार्य, संन्यासी, बाल ब्रह्मचारी व वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् हुए हैं जिन्होंने अपने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ साथ राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रहित के कार्य करने की बात कही है। केवल महर्षि ने ही देश के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी है। वैसे तो महर्षि दयानन्द ने सर्वांगीण विकास की बात कही है, चाहे वह धार्मिक हो, शारीरिक हो, आत्मिक हो, सामाजिक हो व राजनैतिक हो, सभी विषयों में अपनी कलम चलाई है पर देशहित पर विशेष जोर दिया है। वे कार्य इस भाँति हैं।

१. स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषकर्त्ता- महर्षि दयानन्द सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति का उद्घोष किया। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि अपना राज्य चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, तब भी वह विदेशी राज्य से कहीं अधिक अच्छा होता है। इसी को पढ़कर बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि 'आजादी लेना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' और रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद तथा रोशन सिंह आदि क्रान्तिकारियों ने जो आर्य समाजी विचारों के थे उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने जीवन न्यौछावर कर दिये और हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे को चूमा। वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, लाला लाजपतराय ने अपने जीवन का एक-एक पल व एक-एक श्वास देश को स्वतंत्र करने के लिए समर्पित कर दीं। इसी कारण यह कहना उचित ही है कि भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सबसे अधिक भाग आर्य समाजियों ने लिया, इसीलिए पट्टाभि सीतारमैया जो कि कांग्रेसी थे, उन्होंने कांग्रेस का इतिहास लिखा है उन्होंने स्वीकार किया है कि आजादी की लड़ाई में पच्चासी प्रतिशत आर्य समाजी ही थे। इस प्रकार स्वामी जी के उद्घोष से देश में नवक्रान्ति आई जिससे देश १९४७ के १५ अगस्त को स्वतंत्र हुआ। इस आजादी को पाने का सबसे अधिक श्रेय महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को जाता है।

२. नारी उत्थान- महर्षि के आने से पहले देश में नारी जाति की बड़ी शोचनीय दशा थी। उनको घर की चाहरदीवारी के भीतर अपमानित होकर रहना पड़ता था। उनको पढ़ने तथा घूमने-फिरने का कोई अधिकार नहीं था। घर में जब लड़का पैदा होता था तो घर से थाली बजाकर खुशी मनायी जाती थी और जब लड़की होती थी तो पूरे घर में उदासी छा जाती थी। महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को पुरुष के समान अधिकार दिलाया और उसको पढ़ने-पढ़ाने का भी अधिकार दिलाया। महर्षि ने कहा कि स्त्री-पुरुष गृहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। ये दोनों समान होने चाहिए तभी गाड़ी ठीक चलेगी नहीं तो गृहस्थ में लड़ाई-झगड़ा होता रहेगा और गृहस्थ दुःखी बना रहेगा। यह महर्षि जी की ही कृपा है जो इन्दिरा गाँधी नारी के साथ-साथ विधवा होते हुए भी भारत की प्रधानमंत्री बनीं। ममता बनर्जी व जयललिता मुख्यमंत्री बनी हुई हैं।

३. अछूतोद्धार- महर्षि के आने से पहले नारी-जाति से कुछ कम या अधिक अपमानित जीवन अछूत (हरिजन) भाईयों का था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य उनकी परछाईं से भी घृणा करते थे। यदि कोई हरिजन यानि अछूत बगल से भी निकल जाता था तो उसे पहले तो सौ गाली देते थे फिर स्नान करते थे तब उनको शान्ति मिलती थी। उनको पढ़ने का तथा पूजा

पाठ करने के लिए मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था। उनका जीवन पूर्ण दुःखी व अपमानित था जिसके कारण हमारे अछूत (शूद्र) भाई विदेशियों के लोभ, लालच व भय में आकर अपना हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान व ईसाई बनने लगे। महर्षि ने जब अपने अछूत भाईयों की यह दशा देखी तो उनका हृदय रो पड़ा और उन्होंने उनको समानरूप से पढ़ने का अधिकार दिलाया। महर्षि ने कहा कि सभी मनुष्य ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र ही ईश्वर के पुत्र-पुत्रियों के समान हैं इसलिए ईश्वर सबका माता व पिता है और हम सब परस्पर भाई-भाई हैं। इसलिए एक भाई से घृणा करना मनुष्य का कर्तव्य नहीं है इसीलिए आज अछूतों को हर काम में बराबर का अधिकार है और अछूत बड़े से बड़े पद पर जाने का अधिकारी बन गया है। इसीलिए जगजीवन राम जो चर्मकार जाति से थे वे भारत के उप प्रधानमंत्री बने। मायावती जो नारी भी हैं और हरिजन भी हैं वह उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं। यह सब महर्षि जी की ही कृपा है।

४. जाति जन्म से नहीं कर्म से होती है- प्राचीन काल में

महाभारत तक जब विश्वभर में वैदिक धर्म ही था तब हर आठ वर्ष के बच्चे या बच्ची को गुरुकुल में भेजना अनिवार्य था। जब ब्रह्मचारी का समावर्त्तन संस्कार करके उसका वर्ण निर्धारित किया जाता था यानि गुण, कर्म, स्वभाव से वह ब्रह्मचारी ब्राह्मण है, क्षत्रिय है, वैश्य है या शूद्र है, उसी के अनुसार उसको वर्ण मिल जाता था और उसका विवाह भी उसी के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार उसी वर्ण की लड़की से करवा दिया जाता था और उसी वर्ण में रहते हुए वह अपना सुखी जीवन व्यतीत करता था। जब तक भारत में यह व्यवस्था बनी रही तब तक देश उन्नत व सम्पन्न बना रहा और विश्व का गुरु बना रहा। महाभारत के विकराल युद्ध के बाद सभी विद्वान्, आचार्य, योद्धा, नीतिवान समाप्त हो गये और स्वार्थी, अनपढ़ ब्राह्मण अपने स्वार्थ के लिए गुण, कर्म, स्वभाव को छोड़ जन्म से जाति मानने लगे तभी से देश पतित होना आरम्भ हो गया। महर्षि दयानन्द ने इस बात को समझ लिया और वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव से वर्ण स्थापित होने पर जोर दिया जिससे अब कुछ सुधार होता दिखाई दे रहा है।

५. अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड पर कड़ा प्रहार- महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व से वेद ज्ञान का ह्रास होने लगा था। पूरे देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड के पैर जमने लगे थे। महाभारत के भीषण युद्ध में विश्व के सभी विद्वान्, आचार्य, योद्धा तथा वीर पुरुष समाप्त हो गए थे और स्वार्थी, अज्ञानी लोगों का प्रभुत्व हो गया था जिससे देश में अनेक मत-मतान्तर फैल गए और अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया। भूत-प्रेत, गण्डा-डोरी, फलित ज्योतिष, श्राद्ध-तर्पण, शगुन-अपशगुन आदि अनेक अन्धविश्वास व पाखण्ड, कुछ कुरीतियाँ जैसे बाल-वृद्ध विवाह, सतीप्रथा आदि चल पड़े जिससे देश पतन की ओर अग्रसर हो गया। साथ ही मूर्तिपूजा करने से जैनधर्म को बढ़ता देखकर हिन्दुओं ने भी राम व कृष्ण को अवतार घोषित करके उनकी पूजा करवानी आरम्भ कर दी जिससे हिन्दू जैन धर्म में जाने से तो रुक गए लेकिन

मूर्तिपूजा से हिन्दुओं को बड़ा नुकसान पहुँचा। सही ईश्वर उपासना जो स्तुति प्रार्थनोपासना है उसको छोड़कर सभी मूर्तिपूजा में लग गए। मूर्तिपूजक चरित्र को गौण और मूर्तिपूजा को मुख्य समझने लगे, जिससे देश के चरित्र की हानि हुई और देश पतन की ओर बढ़ने लगा। जब महर्षि दयानन्द ने देश की यह पतित अवस्था देखी और यह समझ लिया कि यह स्थिति वेद ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान है उसके प्रायः लुप्त हो जाने से बनी है तब महर्षि ने अनेक दुःख, कष्ट व अभावों को सहकर अपने सच्चे गुरु स्वामी विरजानन्द की गोद में बैठकर करीब तीन साल तक वेदज्ञान का अध्ययन किया और गुरु-आज्ञा से ही वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार करने का व्रत लेकर वेदों का प्रचार किया। जिससे देश में नवजागृति आई और हिन्दुओं में जो कुरीतियाँ कुप्रथाएँ, अन्धविश्वास व पाखण्ड था उन पर कुछ अंशों में रोक लग गई जिससे देश वेदज्ञान की ओर अग्रसर हुआ और उससे स्थिति में काफी सुधार आया।

६. आर्य बाहर से नहीं आये- जब देश अंग्रेजों के अधीन हुआ तब हिन्दुओं के स्वाभिमान को नष्ट करने के लिए भारत के इतिहासकारों को कुछ लोभ लालच देकर उनसे भारत के इतिहास में कुछ गलत बातें लिखवा दीं। पहली बात तो यह लिखवाई गई कि आर्य भी ईरान से या मध्य

एशिया आदि बाहर से आये थे। दूसरी बात यह लिखवाई कि भारत के ऋषि मुनि जो वैदिककाल में हुए थे वे भी गौ-मांस खाते थे आदि। जिससे हिन्दुओं का गौरव तो घटा ही, साथ ही उनका विशेष महत्व भी समाप्त हो गया। इस स्थिति को समझकर महर्षि जी ने वेदों के आधार पर कहा कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में तिब्बत के पठार पर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर युवा अवस्था में अनेक नर-नारी उत्पन्न किए जिससे आगे की सृष्टि चले। वहाँ पर आर्य व अनार्य दोनों थे। हजारों वर्ष बाद उनका परस्पर झगड़ा होने से तिब्बत के पठार से आर्य नीचे आ गये। जिस भाग में आर्य बसे उन्होंने उस प्रदेश को आर्यावर्त्त कहना आरम्भ कर दिया और स्वयं को आर्य कहकर रहने लगे। वही आर्य कालान्तर में अन्य हिन्दू बने। इस प्रकार हिन्दू यानि आर्य आर्यावर्त्त यानि हिन्दुस्तान के आदि निवासी हैं न कि बाहर से आये हैं। महर्षि ने एक बात और कही यदि आर्य बाहर से आये हैं तो आर्यों के आने से पहले इस देश का क्या नाम था हमें इतिहास में लिखा दिखाओ। इस बात पर सबकी बोलती बन्द हो गई। महर्षि के बाद सम्पूर्णानन्द तथा अन्य कई इतिहासकारों ने इस बात को माना।

७. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया- वैदिक काल में केवल भारत में ही नहीं पूरे विश्व में गुरुकुल शिक्षा का प्रचलन था। उनसे जो ब्रह्मचारी निकलते थे, वे पूर्ण चरित्रवान, ईश्वर विश्वासी, विद्वान्, साहसी, शक्तिवान, धैर्यवान तथा समाज, धर्म व राष्ट्र के रक्षक होते थे जिससे केवल एक राष्ट्र ही नहीं मानव-मात्र वेदानुकूल चलकर मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बनते थे। जब से अंग्रेज भारत में आये तब से अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार होना आरम्भ हो गया और देश पश्चिमी सभ्यता की ओर जाने लगा। महर्षि ने यह स्थिति देखकर गुरुकुल शिक्षा का प्रचार किया और उनके बाद उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी ओमानन्द, स्वामी धर्मानन्द आदि ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति का बहुत प्रचार किया। आज तो देश में हजारों की संख्या में गुरुकुल खुले हुए हैं जिनसे अच्छी उम्मीद रखी जा रही है।

८. देश के महान् पुरुषों के चरित्र की रक्षा- देश के महान् पुरुष श्री कृष्ण, हनुमान, बाली, सुग्रीव आदि के बारे में काफी गलत बातें जोड़ रखी थीं। सबसे अधिक तो भगवान

श्रीकृष्ण जैसे महान् योगी को एक चरित्रहीन नचनवा लड़कियों के पीछे घूमने वाला, अनेकों पत्नियों को रखने वाला बना रखा था। महर्षि ने उनको एक महान् योगी, एक पवित्र महान् योद्धा बतलाकर उनके चरित्र को केवल सँवारा ही नहीं बल्कि यह लिखकर कि श्री कृष्ण ने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कोई गलत काम किया ही नहीं, उनके जीवन को और अधिक उज्ज्वल बना दिया। हनुमान बाली-सुग्रीव आदि को बन्दर बना रखा था। महर्षि ने उनको मनुष्य ही बतलाया। इस प्रकार उनके सही स्वरूप को प्रकट किया।

९. शुद्धि प्रथा का प्रचलन किया- हमारे गरीब, अनपढ़ व लाचार हिन्दू वनवासी भाई बहिनों जिन्होंने अर्थ, लोभ लालच से धर्म परिवर्तन कर लिया था उनको पुनः हिन्दू बनाया और हिन्दुओं को संजीवनी बूटी पिलाई।

महर्षि देव दयानन्द द्वारा संचालित इन सब कार्यों से देश में नव जागृति आई, जिससे भारत उन्नत और समृद्धि की ओर बढ़ रहा है। वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश पुनः विश्व गुरु व सोने की चिड़िया कहलाने लगेगा।

- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड़, दो तल्ला, कोलकाता- ७००००७
चलभाष- ०९८३०१३५७९४

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द)

स्वामी दयानन्द प्रचारित वैदिक समाजवाद

कार्ल मार्क्स के समाजवाद की परख की गई परन्तु वह पाँच वर्ष तक भी उस रूप में न चल सका, जिसमें वह चलाना चाहता था। जिस को कामयाब करने के लिए स्टालिन ने

बेगुनाहों का खून किया। अब आपको वैदिक समाजवाद का दर्शन कराते हैं। जो पौने दो अरब वर्ष तक संसार में शान्ति कायम रखे रहा और जिसका पुनरुद्धार महर्षि दयानन्द जी ने किया। अगरचे कार्ल मार्क्स की हार्दिक इच्छा संसार में शान्ति स्थापन करने की ही थी, परन्तु अल्पबुद्धि होने से और वेद का ज्ञान न होने से, वह इसमें असफल रहा परन्तु वेद का सिद्धान्त ऐसे ही अटल है, जैसे कि सूर्य की चाल अटल है।

वैदिक सोशलिज्म के लिए सब से पहले ऋग्वेद ५/६०/५ का मंत्र है-

अज्येष्टासो अकनिष्टास एते सं भ्रातरो वावृधु: सौभगायl
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्य:ll

अर्थात्- सब मनुष्य बिना लिहाज, रंग, नस्ल, जाति और देश के एक जैसे भाई-भाई हैं। उन में कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। वे सब मिलकर सौभाग्य की उन्नति के लिए यत्नशील हों। उन सब का पिता शक्तिसम्पन, सर्वरक्षक, सबको मर्यादा में रखने वाला परमेश्वर और अनेक प्रकार के धन वा मान्य देने वाली पृथ्वी, उनकी माता है। यानि समस्त पृथ्वी के मानव एक परिवार रूप हैं। जिनका माँ-बाप एक ही है और जिनमें बड़ाई छोटाई का कोई भेद नहीं।

इससे उत्तम कोई समाजवाद का क्या स्पष्टीकरण कर सकेगा। और आप यह सुनकर हैरान होंगे कि जहाँ कार्ल मार्क्स जैसे लोग इस मंत्र की सच्चाई को अनुभव कर समाजवाद में समता का प्रचार कर गये। वहाँ अमरीका जैसे धनाढ्य और प्रजातन्त्रवादी देश ने भी, इसी मंत्र को अपना लक्ष्य बनाया। जब अमेरिका के लोगों ने जंग करके अंग्रेजों की गुलामी के जूए को उतार फैंका तो अमेरिका के इन बुजुर्गों ने इसी वेद मंत्र का प्रत्येक शब्द अंग्रेजी में तर्जुमा करके अपने देश की आजादी की बुनियाद में रखा। गोया रूस और अमेरिका जो इस समय दो विपरीत कैम्पों में बँटे होने से दुनिया में अमन कार्य नहीं कर सके, इस वेद मंत्र के अभिप्राय को दोनों ही स्वीकार कर रहे हैं। ये है वेदज्ञान के ईश्वरीय होने का उज्ज्वल उदाहरण कि दुनिया के सब लोग वेदानुयायी ही बनने की कोशिश कर रहे हैं। और जब यह कोशिश पूर्ण रूप से सफल हो जायेगी, संसार में अमन की बाँसुरी बजने लग जायेगी।

The revolution began in 1775 when a group of 13 English colonies revolted against the mother country and the year later their independence.

The founder fathers said:

"we hold these truths to be self evident that all men are created equal that they are endowed by their creator with certain unalienable right. That among these are life, liberty and pursuit of happiness".

Again in the independence charter of U.S.A. it is written-

"The American experience has shown that democracy is a way of life and a system of government by which **men can co-operativly build a strong structure providing a high standard of living for the citizen and at the same time preserve the right and dignity of the individual."**

अमरीका का विधान भी वेद के इस मंत्र को स्वतः प्रमाण स्वीकार कर रहा है जैसे नीचे लकीर खींचे अंग्रेजी के शब्दों

से जाहिर है। अब आप शंका कर सकते हैं कि जब वेद के अनुसार कार्ल मार्क्स ने समता का प्रचार किया कि सब समान हैं और सब के समान अधिकार हैं और फिर तजुर्बा अमल में लाए जाने के पाँच वर्ष के अन्दर-अन्दर ही फेल हो गया तो गोया वेद की वाणी नाकाबले अमल ठहरती है। इसका जवाब भी वेद ही देता है जो कार्ल मार्क्स जैसे तुच्छ बुद्धि वाले इन्सान की अल्प बुद्धि में न आया और फिर तजुर्बा करने वाले वेद की ही शरण में आये।

ऋग्वेद १०/११७/९ में भगवान् उपदेश करते हैं कि-

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः।।

अर्थात् मनुष्य के दोनों हाथ बराबर शक्ति वाले नहीं होते। एक गाय की दो बछड़ियाँ बराबर दूध देने वाली नहीं। एक माता के दो पुत्र जो एक साथ ही पैदा हुए हों बराबर शक्ति वाले नहीं होते। एक समाज में एक ही Status वाले दो

व्यक्ति बराबर दान देने वाले नहीं होते।

इस वेद मंत्र के आधार पर किसी फारसी के कवि ने भी कहा है-

न हर जनज न अस्तो न हर मर्द मर्द।
खुदा पंज अंगुश्त यकसां न करद।।

अर्थात्- हर औरत-औरत नहीं होती, हर मर्द-मर्द नहीं होता, परमात्मा ने किसी की पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं बनाईं। इसी आधार पर पंजाबी में लोकोक्ति है।

माँ ने जाय सत पुत्तर, ते कर्म न दित्ते वण्ड।

फिर अथर्ववेद १२/१/४२ में लिखा है कि- 'मनुष्यों की हर किस्म की शक्तियों में विभिन्नता होने के बावजूद भी क्या करना चाहिए। पृथ्वी तब मनुष्यों की रक्षा करती है जब वह अनेक भाषाओं और अनेक धर्मों के होने पर भी (इस पृथ्वी पर इस प्रकार मिलकर रहते हैं) जैसे एक घर में घरवाले मिलकर रहते हैं। उस वक्त पृथ्वी धन की सहस्त्र धाराएँ उसी प्रकार दिया करती है, जैसे गौएँ निश्चित रीति से दूध की अनेक धाराएँ दिया करती हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

तुलसी इस संसार में भाँत भाँत के लोग।
सब से रल मिल बैठिये नदी नाव संयोग।।
तुलसी इस संसार में सब से मिलिए धाय।
न जाने किस भेष में नारायण मिल जाय।।

और फिर इन वेद के मंत्रों में अगर किसी की समझ में न आने वाली कोई अड़चन हो तो वेद भगवान् ने दोनों उपदेशों को एक और उपदेश देकर Reconcile कर दिया है और वह है वर्ण-व्यवस्था का मूल वेद मंत्र।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत।। - यजुर्वेद ३१/११

अर्थात् जो मनुष्य समाज में ऐसे हैं, जैसे मनुष्य के शरीर में मुख, यानि मुख जैसे गर्दन से ऊपर के हिस्से में सब ज्ञान इन्द्रियाँ हैं। इसी प्रकार मनुष्य समाज में ज्ञानवान होकर ज्ञान का दान करे, प्रसार करे। विद्वान् हो कर विद्या पढ़ाये, उसको ब्राह्मण कहो। जो समाज की रक्षा में तत्पर है, जैसे मनुष्य शरीर की रक्षा में हाथ तत्पर रहते हैं, उसको क्षत्रिय कहो। जो समाज में खेतीबाड़ी, पशु-पालन वा व्यापार करे, जैसे कि पेट में सब कुछ इकट्ठा होकर शरीर के सब अंगों को उनका भाग खाई हुई खुराक में से बराबर मिलता है, उसको वैश्य कहो और जो केवल भार ही उठा सकता है तो जैसे पाँव शरीर का भार उठाये फिरते हैं, उसको शूद्र कहो। गोया यह Division of Labor है जो वेद ने बयान करके दोनों मंत्रों को एक जगह पर रख संसार को अमन से रहने का उपदेश दे दिया है। और कम व अधिक सब संसार में Division of Labor इसी प्रकार से चलती आई है, अब भी चलती है, आगे भी चलती रहेगी। जहाँ-जहाँ और जिस वक्त मनुष्य अपनी अकल को बड़ा समझकर इस (डिविजन आफ लेबर) में टाँग अड़ा कर उसको खराब करने की कोशिश करेंगे वहीं अशान्ति दुःख और सन्ताप पैदा हो जायेगा। रूस में कार्ल मार्क्स का श्रेणी रहित समाज का असूल फेल हो गया और फिर वहाँ भी अनायास ही श्रेणीबद्ध समाज बनाने की योजना बनानी पड़ी। क्योंकि वेद ज्ञान से मुनकिर होने की किसी में शक्ति नहीं है।

इस वेद मंत्र को फारसी के प्रसिद्ध कवि शेख सादी ने इस प्रकार बयान किया है-

बनी आदम आजाये यक दीगरंद,
के दरआफरीनश जे यक जोहरंद।
चूं उजवे वदर्द आवरद रोजगार,
दिगर उजवाहा रा न मानद करार।।

अर्थात् समस्त मनुष्य एक दूसरे के अंग हैं। एक अंग दर्द करे तो बाकी सारे अंग जिस्म के दुःखी होते हैं।

सच्चा और सुच्चा सोशलिज्म जो वेद के उपरोक्त मंत्रों और निम्नलिखित वेद मंत्रों में उपदेश किया गया है। इससे बेहतर कोई आज तक बता नहीं सका। हाँ अपनी अल्प बुद्धि से इसको दूषित कर रहे हैं।

- कुन्दन लाल आर्य
साभार- पूर्ण पुरुष का विचित्र जीवन

समाधान सुझाने से पहले समस्या को समझें

हालाँकि यह जोखिम भरा और मुश्किल है, परन्तु पहले समझने की कोशिश करना या समाधान सुझाने से पहले समस्या को समझना एक ऐसा सिद्धान्त है, जो जीवन के बहुत से क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से सही दिखाई देता है। यह सच्चे प्रोफेशनल की पहचान है। नेत्र विशेषज्ञ के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है, डाक्टर के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। जब तक आपको यह विश्वास न हो कि डॉक्टर ने समस्या समझ ली है, तब तक आपको उसकी दवाओं या समाधान पर जरा भी विश्वास नहीं होगा।

जब हमारी बेटी जेनी सिर्फ दो महिने की थी, तो एक शनिवार को वह बीमार पड़ गई। उस दिन हमारे इलाके में एक फुटबॉल मैच चल रहा था, जिसमें लगभग सबकी गहरी रुचि थी। यह एक महत्वपूर्ण मैच था। लगभग ६०००० लोग उस मैच को देख रहे थे। मैं और सैन्ड्रा भी मैच देखने जाना चाहते थे, परन्तु हम नन्ही जेनी को अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे। उसके उल्टी-दस्त से हम चिंतित थे।

डॉक्टर भी वह मैच देखने गया था। वह हमारा घरेलू डॉक्टर नहीं था, परन्तु फोन पर उपलब्ध था। जब जेनी की स्थिति बिगड़ी, तो हमने डॉक्टर की मदद लेने का फैसला किया।

सैन्ड्रा ने स्टेडियम फोन लगाकर डॉक्टर से बात की। उसकी आवाज की बेचैनी से सैन्ड्रा भाँप सकती थी कि यह मैच का एक महत्वपूर्ण क्षण था। वह तेजी से बोला- 'हाँ, क्या हो गया?'

'डॉक्टर, मैं मिसेज कवी बोल रही हूँ। हम अपनी बच्ची जेनी के बारे में चिंतित हैं।'

डॉक्टर ने पूछा, 'स्थिति क्या है?'

सैन्ड्रा ने लक्षण बताये और डॉक्टर बोला, 'ठीक है। मैं दवायें बता देता हूँ। आप किस दुकान से दवायें मँगवाते हैं?'

फोन रखने के बाद सैन्ड्रा ने महसूस किया कि हड़बड़ी में वह डॉक्टर को पूरी जानकारी नहीं दे पायी थी। बहरहाल उसे यह लगा कि उसने जितना बताया था, वह पर्याप्त था।

प्रायः हम समस्या पर चिन्तन पूर्वक विचार किए बिना ही समाधान में प्रवृत्त हो जाते हैं और अपेक्षित परिणाम न मिलने पर निराश हो जाते हैं। आज 'आर्य जगत्' इसी दौर से गुजर रहा है। समस्याओं के मूल को हम समझ नहीं पा रहे। जिसे देखो समाधान ही सुझा रहा है। कवी एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक हैं। उनके चिन्तन का एक अंश प्रस्तुत है। यद्यपि यह प्रहसन सामान्य तौर पर लिखा है, गम्भीर विचार करने पर हमें भी कुछ कहता प्रतीत होता है। - सम्पादक

मैंने उससे पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है, डॉक्टर को यह मालूम होगा कि जेनी हाल ही में पैदा हुई है?'

सैन्ड्रा ने जवाब दिया, 'मुझे यकीन है कि उसे मालूम होगा।'

'परन्तु वह हमारा घरेलू डॉक्टर नहीं है। उसने पहले कभी जेनी का इलाज नहीं किया है।'

'मुझे फिर भी लगता है कि वह जानता होगा।'

'क्या तुम सचमुच उसे दवा देना चाहोगी, जब तक कि तुम्हें पूरा विश्वास न हो कि उसे यह बात मालूम है?' सैन्ड्रा चुप हो गई। अंततः उसने कहा, 'अब हम क्या करें?'

मैं बोला, 'उसे दुबारा फोन करो।'

सैन्ड्रा ने जवाब दिया, 'तुम उसे दुबारा फोन करो।'

और मैंने किया। डॉक्टर को एक बार फिर मैच से बाहर बुलवाया गया। मैंने पूछा, 'डॉक्टर, जब आपने वे दवायें लिखी थीं, तब क्या आपको यह मालूम था कि जेनी सिर्फ दो महीने की है?'

'नहीं, 'उसने हैरानी से कहा। 'मुझे यह मालूम नहीं था। अच्छा हुआ आपने दुबारा फोन कर लिया। मैं तत्काल दवायें बदल देता हूँ।'

अगर आपको समस्या के निदान में विश्वास नही है, तो आपको समाधान में भी विश्वास नहीं होगा।

यह सिद्धान्त सेल्स में भी सही है। प्रभावकारी सेल्समैन सबसे पहले ग्राहक की आवश्यकताओं, चिन्ताओं और स्थिति को समझने की कोशिश करता है। नौसिखिया सेल्समैन प्रॉडक्ट बेचता है; प्रोफेशनल सेल्समैन आवश्यकताओं और समस्याओं के समाधान बेचता है। यह एक बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण है। प्रोफेशनल सेल्समैन सीखता है कि किस तरह समस्या का निदान (diagnose) किया जाये और उसे समझा जाये। वह यह भी सीखता है कि लोगों की आवश्यकताओं को अपने प्रॉडक्ट्स या सेवाओं से किस तरह जोड़ा जाये। और अगर उसे लगता है कि उसके प्रॉडक्ट्स या सेवा से ग्राहक को लाभ नहीं होगा, तो उसमें यह कहने की अखंडता या ईमानदारी होती है, 'मेरा प्रॉडक्ट या सेवा आपकी इन आवश्यकताओं को पूरी नहीं करेगी।'

उपचार सुझाने से पहले सही निदान करना कानून का भी मूल है। प्रोफेशनल वकील केस तैयार करने से पहले स्थिति समझने तथा कानून और पूर्ववर्ती उदाहरणों को समझने के लिए तथ्य इकट्ठे करता है। अच्छा वकील अपना केस लिखने से पहले विरोधी का केस लगभग लिखता है।

यह प्रॉडक्ट डिजाइन करने में भी सही है। क्या आप कम्पनी के किसी व्यक्ति द्वारा यह कहने की कल्पना कर सकते हैं, 'ग्राहकों का शोध वगैरह बकवास बात है। हमें तो सीधे प्रॉडक्ट डिजाइन करना चाहिये।' दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता की खरीदने की आदतों और उद्देश्यों को भूल जायें- सीधे प्रॉडक्ट डिजाइन कर लो। यह तरीका कभी सफल नहीं होगा।

एक अच्छा इंजीनियर पुल का नक्शा बनाने से पहले काम कर रही शक्तियों और दबावों को समझेगा। एक अच्छा शिक्षक पढ़ाने से पहले कक्षा का मूल्यांकन करेगा। एक अच्छा विद्यार्थी अमल करने से पहले समझेगा। एक अच्छा अभिभावक मूल्यांकन करने या निर्णय लेने से पहले समझेगा। अच्छे निणर्य की कुंजी समझना है। अगर कोई व्यक्ति पहले ही निर्णय ले लेता है, तो वह कभी पूरी तरह नहीं समझ पायेगा।

पहले समझने की कोशिश करना एक ऐसा सिद्धान्त है, जिसकी सच्चाई जीवन के सभी क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई देती है। यह एक व्यापक और आम सिद्धान्त है, परन्तु पारस्परिक सम्बन्धों के क्षेत्र में यह सबसे बड़ी शक्ति है।

साभार- स्टीफन आर. कवी

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

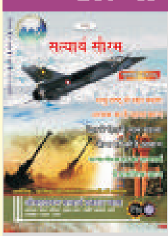

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ ०८ पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

मैं कौन हूँ?

मनुष्य एक चेतन प्राणी है जैसे कि पशु-पक्षी हैं। हमारी चेतना क्या हमारे शरीर का स्वाभाविक गुण है या शरीर से भिन्न किसी अन्य तत्त्व का यह गुण है। मैं इस समय अपनी अंगुलियों से एक कलम को पकड़ कर इन शब्दों को लिख रहा हूँ। इन अंगुलियों में इस क्षण चेतनता है। मेरी बुद्धि द्वारा चुने हुए शब्दों को ये अंगुलियाँ कलम के माध्यम से कागज पर अंकित करती जा रही हैं। किन्तु रात में मैं जब गाढ़ी नींद में होऊँगा तब इन अगुलियों में यह चेतनता विद्यमान नहीं रहेगी। बल्कि यहाँ तक कि कोई मेरी अंगुलियों को उस समय पकड़कर मेरे हाथ को इधर से उधर रख दे तो भी संभवतः मुझे पता नहीं चलेगा।

अब प्रश्न उठता है कि इस क्षण मेरी अंगुलियों में जो चेतनता है वह किसका गुण है। यदि यह गुण अंगुलियों का स्वभाविक गुण कहा जाए तो रात में गाढ़ी नीन्द में जाने पर भी अंगुलियों में चेतनता बनी रहनी चाहिए। स्पष्ट है कि यह गुण अंगुलियों से भिन्न किसी अन्य तत्त्व का है जिसे वैदिक दर्शन में आत्मा कहते हैं। दिन के समय आत्मा जब जाग्रत अवस्था में होता है व शरीर का उपयोग करना चाहता है तब अपनी चेतनता समग्र शरीर में प्रवाहित कर देता है। रात्रि में जब वह गाढ़ी नींद में होता है तब चेतनता को अपने अन्दर समेट लेता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य शरीर व आत्मा का संघात है। शरीर तो परमाणुओं से बना है और इसका घटना-बढ़ना, टूट-फूट होती रहती है। प्रकृति से बनी वस्तुएँ परिणामी कहलाती हैं और वैसा ही यह शरीर है। प्रकृति से बने पदार्थ अचेतन होते हैं यथा घट, पटादि। अतः स्पष्ट है कि हमारा आत्मा प्रकृतिजन्य नहीं है। प्रकृति से भिन्न इसकी स्वतंत्र सत्ता है वर्षों बाद हमारी आकृति व पूरे शरीर में अत्यधिक परिवर्तन होने पर भी हमें लगता है कि हम वही व्यक्ति हैं, जो इतने वर्ष पहले के छायाचित्र में दिख रहा है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि किसी दुर्घटना में किसी का शरीर बहुत बुरी तरह से जल जाता है या हाथ पैर कटकर अलग हो जाते हैं। शरीर में इतने परिवर्तन होने के बाद भी हम यही कहते हैं कि यह व्यक्ति अमुक व्यक्ति है। तो फिर ऐसा क्या है जो बिल्कुल नहीं बदला है। वह आत्मा जो दुर्घटना से पूर्व इस शरीर में विद्यमान था, वही आत्मा दुर्घटना के बाद भी इस शरीर में पूर्ववत् विद्यमान है।

प्रकृतिजन्य न होने के कारण आत्मा अपरिमाणी है अर्थात् उसमें किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता। जब माँ के गर्भ में शरीर छोटा था तब भी यही आत्मा इसमें विद्यमान था जो अब विशालकाय शरीर में विद्यमान है। और तो और आज भी रात में गाढ़ी नींद में जाने पर, यह विशालकाय शरीर कुछ घण्टों के लिए अचेतन सा हो जाता है और यह स्थिति पूरे शरीर की होती है। इससे स्पष्ट है कि हमारा आत्मा अति सूक्ष्म है-एक बिन्दु के समान।

आत्मा व शरीर के युग्म को समझने के लिए एक दृष्टान्त का उपयोग कर सकते हैं। एक कमरे में एक विद्युत बत्ती है। रात्रि का समय है। हम द्वार से अन्दर प्रवेश करते हैं और पाते हैं कि गहरा अंधकार है। कुछ भी कहीं दिखायी नहीं देता है। स्विच दबाते हैं, बत्ती जल उठती है और कमरे में सर्वत्र प्रकाश फैल जाता है। कमरा हमारे शरीर के समान है। बत्ती आत्मा के स्थान पर है और कमरे में प्रकाश का होना, शरीर की चेतनता के समान है।

बत्ती जल उठती है तो ऐसा लगता है जैसे हमारी जाग्रत अवस्था में पूरे शरीर में चेतनता विद्यमान है। बत्ती बुझ जाती है तो पूरे कमरे में अंधकार है जैसे कि गाढ़ी नीन्द के समय शरीर में चेतनता लुप्त हो गयी हो। यदि बत्ती कोई निकाल ले जाए तो उस स्विच को दबाने पर भी अंधकार ही बना रहता है। इसी प्रकार यदि आत्मा शरीर को छोड़ जाए

तो शरीर में चेतना कभी नहीं आ सकती। इसे ही मृत्यु कहते हैं। तब हम मृतक शरीर को जलाकर राख बना देते हैं।

शरीर, मन व आत्मा– आत्मा एक बिन्दु के समान है, जिसकी न लम्बाई है, न ऊँचाई है जबकि शरीर विशालकाय है। अब प्रश्न उठता है कि ये दोनों संयुक्त कैसे होते हैं। मन इन दोनों को जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है। मन प्रकृति के सूक्ष्मतम कणों से बना है। प्रकृति के कणों से बना होने के कारण वह एक ओर स्थूल शरीर से जुड़ जाता है और अति सूक्ष्म कणों से बना होने के कारण दूसरी ओर बिन्दुवत् आत्मा से जुड़ जाता है।

मन स्वयं में तीन कणों का संघात है– मनस्, अहंकार व बुद्धि। बुद्धि जगत् के सूक्ष्मतम कण से बनी है जिसे महत् कहते हैं। बुद्धि को चित्त भी कहते हैं। अहंकार उससे बड़ा कण है ओर मनस् उससे भी बड़ा है। मनस्, अहंकार व बुद्धि अति सूक्ष्म कण हैं जो परमाणु से भी छोटे हैं। मनस् स्थूल शरीर से जुड़ता है। वह हमारी पाँच कर्मेन्द्रियों को संचालित करता है– हस्त, पाद, वाक्, उपस्थ व पायुः। इनके द्वारा हम कर्म करते हैं। इसका दूसरा काम यह भी है कि हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियों से जुड़कर ज्ञान प्राप्त करके आत्मा की ओर पहुँचाना –चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना व त्वक्।

मनस् के द्वारा प्रेषित ज्ञान अहंकार तक पहुँचता है। अहंकार उसे भविष्य के उपयोग के लिए सुरक्षित तो रखता ही है, इसके अतिरिक्त वह उस ज्ञान को बुद्धि तक सम्प्रेषित करता है। अहंकार में हमारी स्मृति है। जो कुछ भी हमारा पिछला ज्ञान है, उसे भी वह सुरक्षित रखता है। हमारे पिछले कर्म के संस्कार भी वहीं पड़े रहते हैं जिनसे हमारी आदतें बनती हैं। बल्कि हमारे पूर्वजन्मों के संस्कार भी वहीं हैं। बुद्धि तत्क्षण उस आगत ज्ञान का आत्मा को बोध करवाता है। तब आत्मा को ऐसा भान होता है कि 'मैं जान गया'।

आत्मा को एक क्षण में एक ही इन्द्रिय द्वारा प्राप्त किये ज्ञान का बोध होता है जिसे वह मनस् से प्राप्त किया था। फिर आत्मा कुछ निर्णय लेकर कर्म करना चाहता है तो अहंकार व बुद्धि की सहायता से निर्णय लेकर, मनस् स्थूल शरीर को क्रियान्वित करता है। एक सरल उदाहरण से इसे हम स्पष्ट समझ सकेंगे।

मैं मेज-कुर्सी पर बैठा हुआ इस क्षण इन पंक्तियों को लिख रहा हूँ। सहसा मुझे स्थूल शरीर की नस नाड़ियों द्वारा प्रेषित एक सूचना प्राप्त होती है जिसे बोल चाल की भाषा में प्यास कहते हैं। शरीर को जल की आवश्यकता है और यह सूचना

किसी ज्ञानेन्द्रिय द्वारा मनस् तक व मनस् द्वारा अहंकार को व अहंकार द्वारा बुद्धि को एवं अन्ततोगत्वा बुद्धि द्वारा आत्मा तक पहुँचा दी गई है। अब आत्मा को प्यास की अनुभूति हो गई है। आत्मा बुद्धि की सहायता से अहंकार में सुरक्षित यह ज्ञान प्राप्त कर लेता है कि प्यास बुझाने के लिए जल पीना वांछनीय है। फिर जल खोजने के लिए उसका आदेश बुद्धि, अहंकार, मनस् के मार्ग से नेत्रों तक जाता है व गर्दन घुमाकर मैं चतुर्दिक जल खोजने लगता हूँ। मेरी आँखें (जो स्थूल शरीर का अंग हैं।) फिर चक्षु, इन्द्रिय, मनस्, अहंकार व बुद्धि के मार्ग से मुझे ज्ञान होता है कि मेज के एक कोने में एक गिलास में जल रखा हुआ है। मैं अपने हाथ पैर पुनः इस प्रकार हिलाता हूँ और जल पीने लगता हूँ। एक अति सामान्य क्रिया का यह वर्णन है– प्यास लगने पर जल पीना। इसका और भी विशद् वर्णन संभव है। इस वर्णन का उद्देश्य यह दर्शाना है कि हमारा सूक्ष्म शरीर (जो कि मनस्, अहंकार व बुद्धि का संघात है और जिसे समूह के रूप में मन भी कहते हैं।) अत्यन्त सूक्ष्म है व अत्यधिक तीव्र गति से कार्य करता है संभवतः प्रकाश की गति से भी अधिक। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पूरे जगत् में मानव मन सबसे अधिक विलक्षण वस्तु है और यह तथ्य एक सीमा तक पशु-पक्षी के मन पर भी लागू होता है। हमारे मन का सूक्ष्म व तीव्र गतिवाला होने के कारण इस पर नियंत्रण कर पाना कठिन है। वैदिक ऋषियों ने इस रहस्य को जाना व इसी आवश्यकता को समझते हुए हमारा मार्गदर्शन किया है कि हम हमारे तन-मन के स्वामी कैसे बन सकते हैं। इस प्रसंग में योगाभ्यास की उपयोगिता को समझना आवश्यक है और संध्या से हम इस दिशा में प्रगति कर पाते हैं। संध्या से जहाँ हम मन को स्वस्थ व पवित्र बनाते हैं उसको विश्राम भी दिलाते हैं। तत्पश्चात् आत्मतत्व परमात्मा से आत्म बल प्राप्त कर सकता है।

शरीर, प्राण, मन व आत्मा– अभी तक हमने जिन क्रियाकलापों की चर्चा की है वे जाग्रत अवस्था में या स्वप्नावस्था में सम्पन्न होते हैं। जाग्रत अवस्था में मन व

उसके माध्यम से चेतनता शरीर में भी पहुँच जाती है। फिर तन-मन के द्वारा हम ज्ञान प्राप्त करते हैं। स्वप्नावस्था में केवल मन तक ही चेतनता प्रवाहित होती है और मन में क्रियाएँ चलती रहती हैं। गाढ़ी नींद की अवस्था को सुषुप्ति कहते हैं, जब तन व मन दोनों ही चेतनता से विहीन होते हैं। तब कहीं भी कोई ऐच्छिक गतिविधि(वॉलण्टरी फंक्शन्स्) नहीं होती। आत्मा को कोई सुध नहीं रहता। लेकिन तब भी हमारे प्राण चलते रहते हैं। इनके मुख्य पाँच संस्थान हैं जो निरन्तर कार्य करते हैं। इन अनैच्छिक क्रियाओं (नॉन वॉलण्टरी फंक्शन्स) को प्राण, अपान, व्यान, समान एवं उदान के नामों से जाना जाता है। श्वाँस द्वारा प्राणवायु का ग्रहण, निःश्वास द्वारा अपान वायु का क्षेपण, हृदय रूपी पम्प के द्वारा रक्त का समस्त शरीर में प्रवाह, भोजन का पाचन एवं तज्जन्य रसों को ग्रन्थियों द्वारा शरीर के अंग प्रत्यंग तक पहुँचाना, इत्यादि क्रियाएँ शरीर में हर क्षण चलती रहती हैं। इनके चलते ही हमारा जीवन है नहीं तो मृत्यु।

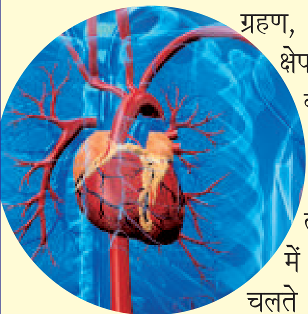

इन्हें प्राण कहते हैं। इनकी आसान पहचान है कि सुषुप्ति में जो भी गतिविधि चल रही होती है वह पाँच प्राणों में से किसी एक के द्वारा संचालित होती है। इन पर हमारा कोई वश नहीं है। सर्वप्रथम वैदिक ऋषियों ने प्राण को जाना। प्राण की गतिविधियों का संचालन परमात्मा द्वारा होता है, अतः परमात्मा को उन्होंने 'प्राण' का भी नाम दिया। अभ्यास से हम श्वाँस-प्रक्रिया पर यत्किंचित नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं इसे ही प्राणायाम कहते हैं। भारत की विश्व को इस देन पर प्रत्येक भारतीय को गर्व होना एवं गर्व करना चाहिए।

उपसंहार – हमने विचार किया कि हमारे शरीर की चेतनता शरीर से भिन्न आत्मा तत्व का गुण है। आत्मा के रहते शरीर में चेतना है अन्यथा आत्मा के प्रस्थान करते ही इसे मृत्यु का आलिंगन करना पड़ता है। जहाँ शरीर विशालकाय है, वहीं आत्मा अतिसूक्ष्म बिन्दुवत् है। इन दोनों के बीच मन एक कड़ी है जिसे सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं। इस सूक्ष्म शरीर के अंतर्गत तीन इकाइयाँ हैं- मनस्, अहंकार व बुद्धि।

मनस् का काम मुख्यतः बाहरी स्थूल शरीर से सम्पर्क जोड़ना है। प्रथमतः स्थूल शरीर के इन्द्रिय गोलकों से आने वाले ज्ञान को ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त करके भीतर अहंकार को प्रेषित करना। द्वितीयतः आत्मा से प्राप्त आदेश के अनुसार कर्मेन्द्रियों द्वारा यथोचित कर्म का सम्पादन। ज्ञान को भीतर पहुँचाना व कर्म को बाहर।

अहंकार के मुख्य दो कार्य हैं। प्रथमतः भीतर आने वाले प्रत्येक ज्ञान का व बाहर जाने वाले प्रत्येक कर्म का लेखा जोखा सुरक्षित रखना, भविष्य में उपयोग में लेने के लिए। इस गुण को स्मृति कहते हैं। द्वितीयतः मनस् से प्राप्त ज्ञान को बुद्धि तक पहुँचाना व बुद्धि से प्राप्त आत्मा के आदेश को मनस् तक पहुँचाना।

बुद्धि एक विलक्षण तत्व है व महत् नामक प्रकृति के सूक्ष्मतम कण से बना है। यह एक पंच आयामीय दर्पण/पर्दे के समान है जिस पर अहंकार द्वारा सम्प्रेषित रूप, रस, गंध, स्पर्श व शब्द तुरन्त प्रस्तुत हो जाते हैं व आत्मा को बोध कराते हैं। मनस् द्वारा बाह्य जगत् से लाये गये तात्कालिक ज्ञान का यह तत्क्षण बोध तो कराती ही है, उसके साथ ही साथ यह अहंकार की स्मृति में रखे हुए विगत् ज्ञान का भी बोध कराती है। कल्पना कीजिए कि अभी मैं मुम्बई में जलेबी खा रहा हूँ तो उसके स्वाद का मुझे तत्क्षण बोध हो जाता है और उसी क्षण में दिल्ली के चाँदनी चौक पर दो महीने पूर्व खायी जलेबी से तुलना भी कर लेता हूँ जिसका स्वाद भी मेरी स्मृति में संजोकर रखा हुआ है और मैं सहसा कह उठता हूँ कि मुम्बई की जलेबी व दिल्ली की जलेबी किस प्रकार भिन्न हैं।

परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को तन व मन के इन अद्भुत साधनों के साथ इस जगत् में भेजा है। परमात्मा की रचना की यह विशिष्टता है कि वह हमें बना कर परे नहीं रख देता जैसे कि एक कुम्हार मिट्टी के घड़े को बनाकर रख देता है। हम मिट्टी का घड़ा अपने घर में ले आते हैं। कभी-कभी उसमें से जल चूने लगता है किन्तु जब तक उसे कुम्हार के पास वापस न ले जायें तब तक उसे ठीक नहीं किया जा सकता। परमात्मा विचित्र प्रकार का सृजनकर्त्ता है। वह जिस वस्तु को बनाता है उसके अन्दर विराजमान रहते हुए वह उस वस्तु को सुचारु रूप से चलायमान भी रखता है। उसकी इस शक्ति का नाम 'प्राण' है। जब तक 'प्राण' चलते हैं तब तक जीवन है। प्राण हमारे तन व मन को सही ढंग से काम के लिए उपयोगी बनाये रखते हैं। रात में जब हम गाढ़ी नींद में सो जाते हैं तब भी पाँचों प्राण कार्यरत रहते हैं और प्रातः हमारा तन व मन हमारे उपयोग के लिए विद्यमान रहता है। इनका सदुपयोग करते हुए जीवन के सामान्य ताने बाने को बुनते हुए (जो कि पशु-पक्षी भी करते ही हैं) मनुष्य से अपेक्षा की जाती है कि वह मानव जीवन के कुछ उदात्त उद्देश्य बनाए एवं उनको प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करे।

– डॉ. हरीशचन्द्र

साभार- संन्ध्योपासना एक वस्तुपरक विवेचन

Manusmrti and its relevance in today's life

- Dr. Ramesh Gupta

The Vedas have been firmly established as the oldest knowledge known to us. The teachings of sage Manu are based on Vedic principles. The Vedas do not contain any reference to any place, person or event. Teachings of the Vedas are purely the principles laid down to make our lives better. In the early periods of human civilization, at some point a need was felt to create guidelines for the proper functioning of an individual, a family and humanity at large. Sage Sv**ā**yambhuvaManu, considered the most stable and wise man of his time, was approached to formulate such guidelines. He was a son of Brahm*ā*, considered to be the sage who propagated the Vedas into the society. The Vaivasvata Manu was the descendant of Sv**ā**yambhuva Manu.

In Saṅ skrta literature, a description of seven Prajāpati, or the leaders of early society who guided social functioning, has been found. In the same dynasty, somewhere along the line, Iksav***ā***ku was the ruler and he may have started the Dynasty which came be known as the Sun Dynasty or the S***ū***ryavaṛ ***śī***,. It is the same dynasty in which Śrī Rāma and Śrī Kṁṁa were born. The name Manu became so prestigious and famous that the entire humanity has become known as M*ā*nava, or human.

The word Manu or name close to it has also been used in various other languages such as 'man' in English, 'mann' in German, 'mynos' in Greek, etc. Several Western authors, including Manning in his writings, "The story of medieval and ancient India", have commented that Manu is the father of mankind. It is clear from the ancient literature and inscriptions found in Greece, Iran, Cambodia, etc. that they considered Manu to be their ancestor as well. Greek literature gives a reference to the sun dynasty as well. Cambodia has been referred to by the name "Kambuj" in Samskrta literature. InThailand, even today, reference to Śrī Rāma and Śrī Rāmāyaṅa is very prevalent, such as in the names of the rulers, roadsand cultural shows to name a few.

The sage Manu took Vedas as the sole source of his teachings. **Nowhere in the Vedas there is any mention of caste system or negative comments about women.** Teachings of Manusmrti have been referred to in Rāmāyana, Mahābhārata and Brāhmana literature. This clearly makes **Manusmrti as the oldest source of knowledge after the Vedas,** obviously predating all other scriptures. There are two schools of thought on the origin of Vedas. One is that the Vedas was the knowledge given to four deeply meditating rsis, Agni, Vāyu, Āditya and Aṅgirā, who then decoded the knowledge to form the 4 Vedas. The other school of thought is that Vedas were a human creation. It is clear however that irrespective of whether the Vedas were of human creation or knowledge given by God, this seems to have been the earliest knowledge known to humanity. There is no reference to any name, place or a person in the Vedas. The Manusmṁti was created after that, followed by Brāhmaṅa, Āraṅyaka, Upaniṁad, the 6 books of philosophy, Rāmāyaṅa, and Gītā in that order. In Rāmāyaṅa, King Bali was killed by an arrow by Śrī Rāma. While dying, Bālī questioned "why have you shot me, what have I done wrong to you". In that situation, Śrī Rāma gave a reference to the teachings of Manusmṁti, in which a śloka with the exact same statement has been found.

The Manusmrti, which is available at present, contains many contradictory statements. This has resulted in a great deal of misunderstanding and misrepresentation of the teachings of Manu. Over the periods of time, many scholars including **Balluck Bhatt have agreed that there are about 200 shlokas which have been added in the original text over the period of**

time. This adulteration has done tremendous injustice to the original intent of Sage Manu. This has made sage Manu appear as if he was trying to divide the society on the basis of caste and gender. This adulteration is similar to what has been done in Mahabharata, Gita, and Ramaya*n*a. Vedic scholars tried hard to bring back the reality and glory of teachings of Manusmrti. Several arguments have been put forward to explain that there has been adulteration in Manu Smriti by various people throughout history to put their own ideology in a famous and popular scripture.

Adulterations include:

1. Subject matter: Intermixed with the main subject matter are discussions about completely unrelated topics. Here are some examples:

a. There is description of creation the way it should be and then it is stated that Brahma was born and hatched from an egg and then he in turn created the universe.

b. At places, Manu has been praised a lot and in other shlokas, there is systematic criticism of Sage Manu.

c. The Manusmriti has followed the Vedic teachings and has described the 16 sanskars and 4 stages of life appropriately. It is mentioned that a Brahmachari is supposed to live in a Gurukul away from home. There is, however, a shlokha that advises the Brahmachari to bow to parents and all family elders both morning and evening. Since the Brahmachari is already away from home, this is nonsensical as he does not have parents present there to bow to.

d. The age of marriage is to be upon attainment of adulthood and in another place, it is mentioned that a 24 yr. old man should marry an 8 yr old girl.

e. If a Brahmin is married to a Brahmin girl and son is born, he gets 4 parts of property, if son is born from Kshatriya mother, 3 parts, if from a Vaishya mother, 2 parts and if from a shudra mother, 1 part. This makes no sense what so ever.

2. Contradictory statements: While Manu is emphasizing and recognizing certain dogma or ideology at a given place in the text, the same ideology has been followed by a contradictory in the shloka. For example; while discussing that if a married couple cannot have children then the woman with the consent of her husband, can conceive with the brother in law, next to it is a statement made that doing so is not allowed. Similarly, while the text clearly emphasizes nonviolence, consumption of meat is advocated at another place in the text.

3. Repetition of topics: There is repetition of topics, some appearing several times.

4. Style: Each author has his/her style. One can clearly see at many places that some shlokas which don't seem match with Manu's style and intentions. The original Manusmṙiti seems to have been in the form of discourses or lectures rather than an essay or simple book. It appears that some other scholar such as Bhṛgu or some other follower of Sage Manu have integrated other material in the book. This conclusion seems logical since in the very beginning of the book,it is mentioned that the some wise men got together and asked Manu ji to explain about life. There is a subsequent statement that after educating Bhṙgu,Manu ji said that "now Bhṙgu will explain you the whole subject. This seems to be an adulteration.

5. Baseless arguments: There is a śloka that if a person urinates while facing sun, moon, cow, water, fire, air or a Brahmin he/she will lose his/her intellect.

6. Exaggerations: It is mentioned that even the thought of trying to kill a Brahmin will go to hell for 100 yrs. and if a person actually kills a Brahmin, he/she will be in hell for 1000 yrs.

7. Favoritism: Brahmins are favored at many places in the text available at present. It is mentioned in one śloka that a 10 year old Brahmin will be like a father to even a 100 year old person of any other Varṅa (caste).

8. Against the Vaidik (Vedic) principles: although it is clear that Manu ji firmly followed the Vaidik (Vedic) principles, there are many ślokas which are contradictory to that ideology, for example, there is mention at places that women and Śūdras shouldn't be allowed to recite Vaidik (Vedic) mantras and study Vaidik (Vedic) texts. This is quite against what has been propagated by the Vedas.

To be continued ....

M.D., F.A.C.P., F.A.C.G.
Email: rameshamita@gmail.com

तन से विदेशी मन से स्वदेशी

हिंदी सेवक डा. कामिल बुल्के

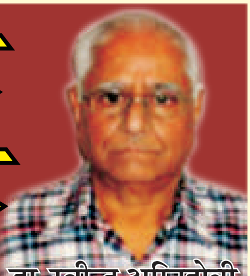

डा. रवीन्द्र अग्निहोत्री

हमारे देश में ऐसे लोग तो गली-गली में दिखाई दे जाते हैं जो तन से तो इस देश के लगते हैं, पर मन से पूरी तरह विदेशी हैं (वर्तमान शिक्षा की रूपरेखा जिस मैकाले ने बनाई थी, उसका उद्देश्य भी यही था- रंगरूप में भारतीय पर रुचियों, नैतिकता, अपनी सोच में यूरोपीय बनाना)। यहाँ हम एक ऐसे विद्वान् से आपका परिचय करा रहे हैं जो तन से तो विदेशी था, पर मन से भारतीय था। उसका नाम था कामिल बुल्के। वह यहाँ आया तो था ईसाई धर्म का प्रचार करने, पर यहाँ आने के बाद वह यहाँ की संस्कृति में कुछ ऐसा रमा कि उसने अपने को विदेशी मानना ही बन्द कर दिया। उसका जन्म बेल्जियम के एक गाँव ''रैम्सकपेले'' (वर्तमान वेस्ट फ्लेंडर्स) में एक साधारण परिवार में उसी सितम्बर के महीने में (१ सितम्बर, १९०९ को) हुआ था जिसका हमारे यहाँ हिन्दी से विशेष सम्बन्ध है। जब तीन वर्ष की आयु में प्रारंभिक शिक्षा के लिए उसे कान्वेंट ले जाया गया तो वहाँ की मदर सुपीरियर ने मानो आशीर्वाद देते हुए कहा कि भगवान से संन्यासी बनने का वरदान माँगना। यह आशीर्वाद आगे चलकर बहुत फला।

पढ़ाई में तो बुल्के जी प्रारंभ से ही प्रतिभाशाली सिद्ध हुए। आगे चलकर इंजीनियरिंग की अत्यन्त कठिन प्रवेश परीक्षा में भी वे प्रथम आए, पर यह कोर्स पूरा करते-करते उन्होंने अपना जीवन धर्म-सेवा के लिए अर्पित करने का दृढ़ निश्चय कर लिया और माता-पिता की अनुमति से १९३० में रोमन कैथोलिक धार्मिक संगठन (Jesuit) में प्रवेश ले लिया, (पश्चिमी) दर्शन शास्त्र में एम. ए. कर लिया, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, फ्लेमिश, लैटिन, ग्रीक आदि भाषाओं पर अधिकार प्राप्त कर लिया और भारत के बारे में अधिक न जानने के बावजूद धर्मप्रचार के लिए भारत जाने की इच्छा व्यक्त की ।

लगभग २६ वर्ष की आयु में जब वे १९३५ में 'ब्रदर' के रूप में भारत आए (फादर १९४१ में बने), और दार्जिलिंग, गुमला (झारखंड) से होते हुए राँची उनकी गतिविधियों का केंद्र बना, उस दौरान उन्होंने अनुभव किया कि भारत की संस्कृति बहुत प्राचीन भी है और समृद्ध भी, उसे ठीक से जानने के लिए उसके दर्शन का अध्ययन करना चाहिए । अतः उन्होंने हमारे छह दर्शनों में से न्याय और वैशेषिक दर्शनों के अंग्रेजी अनुवादों का अध्ययन करके उन्हें सरल भाषा में समझने, समझाने के लिए अंग्रेजी में ही एक पुस्तक लिख तो डाली, पर उसी दौरान उन्हें यह अनुभव हुआ कि भारत की संस्कृति को ठीक से जानने के लिए हिंदी और संस्कृत भाषाएँ सीखना बहुत आवश्यक है। यह भी अनुभव किया कि यहाँ का हर व्यक्ति रामायण और उसके विभिन्न पात्रों से बहुत प्रभावित है, अतः उसे भी ठीक से जानना चाहिए। बस, यहीं से मानो उनके 'भारतीयकरण' की शुरुआत हो गई ।

वे मिशन द्वारा संचालित गुमला (झारखंड) के जिस विद्यालय में गणित पढ़ाते थे, उसी में हिंदी की क्लास में अन्य विद्यार्थियों के साथ पीछे बैठकर उन्होंने हिंदी सीखनी शुरू कर दी। बाद में अवसर मिलने पर पंडित बदरीदत्त जी से हजारीबाग में केवल एक वर्ष हिंदी एवं संस्कृत का विशेष अध्ययन करके इन भाषाओं पर इतना अधिकार प्राप्त कर लिया कि वे हिंदी में तुलसीकृत रामचरितमानस और विनय पत्रिका तथा संस्कृत में पंचतंत्र आदि की कहानियाँ स्वयं पढ़ने लगे। हिंदी-संस्कृत का अपना अध्ययन जारी रखते हुए उन्होंने १९४० में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'विशारद', १९४५ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिंदी, संस्कृत में बी.ए. तथा १९४७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से (जो उस समय देश का सबसे अधिक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय था) हिंदी में एम.ए. किया एवं अपने शोध का विषय स्वयं प्रस्तावित करते हुए वहाँ से 'रामकथा-उत्पत्ति और विकास' पर १९४९ में डी. फिल. किया। उच्चकोटि का शोधकार्य होने के कारण अगले ही वर्ष १९५० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने ही इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। इस पुस्तक में २१ अध्याय हैं और हर अध्याय में शोध की इतनी सामग्री प्रस्तुत की गई है कि आज तो हर अध्याय पर पीएच. डी. दी जा सकती है। १९५१ में उन्होंने भारतीय नागरिकता प्राप्त करके विदेशी होने की तकनीकी पहचान भी मिटा दी ।

रामकथा-उत्पत्ति और विकास

हमारे यहाँ अनेक लोगों को राम का नाम सुनते ही 'भगवान राम' की याद आने लगती है, रामकथा से संबंधित हर ग्रन्थ 'धार्मिक ग्रन्थ' लगने लगता है और राम का नाम लेने वाला 'राम भक्त' लगने लगता है (शायद इसीलिए कविवर 'बच्चन' जी ने भी फादर बुल्के की प्रशंसा में लिखा- 'ईसाई संस्कार लिए भी, तुमको पूज्य हुए श्री राम) ऐसे लोगों को तो इस पुस्तक से संतोष नहीं मिलता क्योंकि इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है। इतना ही नहीं, ऐसे लोग जब यह पढ़ते हैं कि इसमें प्रचलित रामकथा के अनेक प्रसंग प्रक्षिप्त बताए गए हैं, तो उन्हें इसमें ईसाइयों के षड्यंत्र की बू आने लगती है पर जो लोग अपनी संस्कृति के उदात्त तत्वों को जानना चाहते हैं, जिन्हें यह देखकर दुःख होता है कि हमारे अनेक प्राचीन महत्वपूर्ण ग्रंथ अब अपने मूल रूप में सुरक्षित ही नहीं, धूर्त लोगों ने उनमें मनमानी मिलावट करके उनका स्वरूप ही बिगाड़ दिया, जो यह जानने के लिए उत्सुक ही नहीं, व्यग्र रहते हैं कि इन ग्रंथों का मूलरूप क्या था, आदि। उन्हें इस पुस्तक से पूरा संतोष मिलता है, पुस्तक पर गर्व होता है और लेखक के प्रति मन श्रद्धा से भर जाता है क्योंकि इसमें एक सत्यान्वेषी विद्वान् द्वारा उस रामायण की खोज करने का गंभीर प्रयास किया गया है जो 'आदिकवि वाल्मीकि' की मूल रचना थी, पर अब जो अनेक प्रक्षेपों (मिलावटों) के साथ मिलती है ।

यह ध्यान देने योग्य है कि रामकथा का सबसे पहला काव्य है वाल्मीकि रामायण, पर आज उसके तीन संस्करण (दक्षिणात्य, गौडीय एवं पश्चिमोत्तरीय) मिलते हैं जिनमें समानता कम, अंतर अधिक है, बल्कि कहना चाहिए- अंतर बहुत अधिक है। केवल एक तिहाई श्लोक ही ऐसे हैं जो कहीं-कहीं पाठभेद और क्रमभेद के बावजूद समान हैं। अपने इस ग्रन्थ में बुल्के जी ने वर्तमान समय में बहुप्रचलित तुलसी कृत रामचरित मानस सहित देश-विदेश के लगभग तीन सौ नए-पुराने कवियों द्वारा लिखी गई राम कथाओं का और विभिन्न जन-जातियों में प्रचलित मौखिक रामकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके यह बताया है कि किस कवि ने अपनी रचना में कौन सी नई कल्पना करके रामकथा को नया रूप प्रदान किया। साथ ही इसमें रामकथा से संबंधित अनेक प्रश्नों पर विचार करके उनके समाधान प्रमाण सहित दिए गए हैं। जैसे, रामकथा ऐतिहासिक है, काल्पनिक नहीं। वेदों में आए सीता, दशरथ, इक्ष्वाकु आदि शब्द रामकथा से संबंधित नहीं हैं, वहाँ इनके अर्थ ही अलग हैं, आदि कवि वाल्मीकि और महर्षि वाल्मीकि एक ही व्यक्ति नहीं, अलग-अलग महापुरुष हैं, 'वानर' 'ऋक्ष' आदि पशु नहीं, आदिम जातियाँ हैं, अवतारवाद से संबंधित सामग्री प्रक्षिप्त है, सम्पूर्ण बालकाण्ड और उत्तर कांड बाद में जोड़े गए हैं, आदि। इसीलिए विद्वानों ने इसे 'रामकथा का विश्वकोश' कहा है।

बुल्के जी यह देखकर आश्चर्यचकित हुए कि आदिकवि वाल्मीकि ने रामकथा को अपने काव्य 'रामायण' में ऐसे आदर्श रूप में प्रस्तुत किया कि बाद में भारत की हर भाषा में सर्वप्रथम महाकाव्य रामकथा पर ही लिखा गया और हर भाषा में रामकथा से संबंधित काव्य ही सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ। वाल्मीकि की इस प्रतिभा के सामने नतमस्तक होते हुए डॉ. बुल्के ने अपना ग्रन्थ आदिकवि वाल्मीकि को ही समर्पित करते हुए लिखा, 'उनकी प्रतिभा ने रामकथा को भारत तथा निकटवर्ती देशों के साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया और भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक बना दिया।'

बुल्के जी ने इस ओर भी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है कि 'केवल भारतीय साहित्य में नहीं, बल्कि विश्व साहित्य में वाल्मीकि एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने इतने व्यापक रूप में परवर्ती साहित्य को प्रभावित किया।' आज सामान्य लोग तुलसी कृत रामचरित मानस को ही रामायण कहने लगे हैं, और आदिकवि वाल्मीकि एवं उनकी रामायण को लगभग भूल ही गए हैं पर बुल्के जी ने हमें आदिकवि वाल्मीकि के महत्व से अवगत कराया है। इसके लिए हम बुल्के जी के ऋणी हैं।

बुल्के जी के भारत प्रेम का एक और उदाहरण देखिए। उन्होंने जब यह रिसर्च का काम किया, तब हमारे देश के सभी विश्वविद्यालयों में रिसर्च की थीसिस अंग्रेजी में ही स्वीकार की जाती थी। बुल्के जी यों तो विदेशी थे और अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं के विद्वान् थे, पर हिंदी के कट्टर समर्थक थे। वे चाहते थे कि इस देश में सारा काम हिंदी में किया जाए। वे कहा करते थे कि भारत में हिंदी महारानी है और अंग्रेजी नौकरानी। इसीलिए उन्होंने आग्रह करके इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नियम बदलवाए और

अपनी थीसिस हिंदी में ही प्रस्तुत करके रिसर्च के क्षेत्र में एक नई और अत्यंत स्वस्थ परम्परा की शुरुआत की।

अंग्रेजी-हिंदी कोश-

देश आजाद हो चुका था, संविधान में हिंदी को राजभाषा घोषित किया जा चुका था, पर सारा सरकारी कामकाज अंग्रेजी में ही होता था। सरकार का तर्क था कि हिंदी में पारिभाषिक शब्द ही नहीं हैं। बुल्के जी ने इस आरोप को दूर करने के लिए 'ए टेक्निकल इंग्लिश-हिंदी ग्लासरी' (१९५६) बनाई और बाद में अंग्रेजी-हिंदी के किसी अच्छे कोश की कमी को देखते हुए उन्होंने एक ऐसा 'अंग्रेजी-हिंदी कोश' (१९६८) में बनाया जो अपने कलेवर में लगभग चार हजार शब्द समेटे मध्यम आकार का होने के बावजूद हमारी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएँ अच्छी तरह पूरी करता है, जिसमें अंग्रेजी के शब्दों के लिए बहुत सही हिंदी शब्द दिए हैं, अंग्रेजी शब्दों के मानक उच्चारण देवनागरी में दिए हैं, अंग्रेजी के जिन शब्दों का अनेक अर्थों में प्रयोग होता है, उनका एक-एक अर्थ अंग्रेजी में कोष्ठक में देकर उसके लिए हिंदी समानार्थी शब्द दिए हैं। इन्हीं कारणों से इस कोश की विद्वानों ने बहुत सराहना की है। सामान्यतया कोशों में बहुत छोटे आकार के अक्षरों का प्रयोग किया जाता है, पर यह एकमात्र ऐसा कोश है जिसमें बड़े आकार के अक्षरों का प्रयोग किया गया है। बुल्के ने यह कोश प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा को समर्पित किया है जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उनके गुरु थे और जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन ने उनके हिंदी प्रेम को स्थायी बना दिया। यह कोश बहुत लोकप्रिय हुआ।

श्री बुल्के के माता-पिता

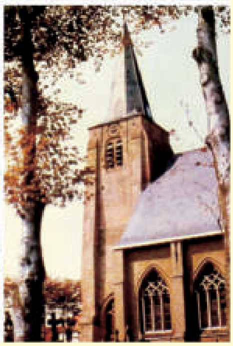

फादर बुल्के के जीवन काल में इसके तीन संस्करण १९६८, १९७१ और १९८१ में प्रकाशित हुए तथा बीच के अंतराल में इसके अनेकानेक पुनर्मुद्रण हुए जिनमें से कई पुनर्मुद्रण तो चार-छह महीनों में ही हुए। अनेक लोग तो केवल इस कोश के कारण ही बुल्के जी के नाम से परिचित हुए।

बाइबिल एवं सम्बन्धित साहित्य का अनुवाद -

बुल्के जी ने देखा कि बाइबिल एवं सम्बन्धित साहित्य के जो अनुवाद हिंदी में किए गए हैं, उनकी भाषा हिंदी की प्रकृति और उसके मुहावरे के अनुरूप नहीं है। अनेक भाषाओं के विद्वान् बुल्के जी ऐसे विदेशी थे जिनका कहना था कि 'जो भाषा मैं सबसे अच्छी तरह जानता हूँ वह हिंदी ही है।' अतः उन्होंने शुद्ध हिंदी में ईसाई धर्म से संबंधित साहित्य तैयार किया। उन्होंने बाइबिल की सामग्री के आधार पर ईसा मसीह की जीवनी और कार्यों से संबंधित 'मुक्तिदाता' (१९४२ में), 'प्रभु ईसा के पर्वत प्रवचन' (१९५६ में), और 'सुसमाचार' (१९६६ में) प्रस्तुत किए। कैथोलिक चर्च में मसीही उपासना के समय पढ़े जानेवाले बाइबिल के उद्धरणों के तीन पाठ संग्रह १९७२, १९७३ और १९७४ में तैयार किए। आज कैथोलिक चर्चों में हिंदी में मसीही उपासना के लिए इन्हीं का प्रयोग किया जाता है। जानकार पाठक जानते ही हैं कि 'बाइबिल' स्वतंत्र पुस्तक न होकर लगभग १६०० वर्षों में ४०लोगों द्वारा लिखी गई अनेक पुस्तकों का संकलन है जिन्हें अब स्थूल रूप से दो खण्डों में विभक्त किया गया है- ओल्ड टेस्टामेंट एवं न्यू टेस्टामेंट। बुल्के जी न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद 'नया विधान' नाम से १९७७ में पूरा करने के बाद ओल्ड टेस्टामेंट का अनुवाद करने में जुट गए। उसके एक हजार से अधिक पृष्ठों में से वे लगभग नौ सौ पृष्ठों का ही अनुवाद कर पाए थे कि लगातार कठोर परिश्रम करने के कारण उनके स्वास्थ्य ने साथ देना बंद कर दिया। यों उनका स्वास्थ्य कभी पूरी तरह ठीक रहा ही नहीं। उनका जन्म गर्भ के सातवें महीने में ही हो गया था। शायद यह भी एक कारण हो कि पेट के रोग तो उन्हें आजीवन परेशान करते ही रहे, कान से भी उन्हें कम सुनाई देता था जिसकी वजह से वे १९५० से ही श्रवण यन्त्र का उपयोग करने लगे थे। बाद में उन्हें उच्च रक्त चाप, गुर्दे और हृदय की कमजोरी, दमा आदि रोगों ने भी घेर लिया और अंत में पैर में गैंग्रीन हो गया। उन्हें इलाज के लिए राँची से दिल्ली लाया गया पर सारे उपचारों को धता बताते हुए सरस्वती के इस वरद पुत्र को हिंदी के उस योद्धा को ७३ वर्ष की आयु पूरी करने से कुछ ही दिन पहले १७ अगस्त १९८२ को काल ने हमसे छीन लिया ।

बुल्के जी सब तरह के विवादों से परे थे। अपने समकालीन लगभग सभी बड़े साहित्यकारों और हिंदी से संबंधित सभी प्रमुख संस्थाओं से जुड़े रहकर वे मार्गदर्शन करते रहे।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के तो वे संस्थापक सदस्य थे। उनकी विद्वत्ता का सम्मान कैथोलिक चर्च ने भी उन्हें तरह-तरह की सुविधाएँ देकर किया। उन्हें सेंट जेवियर कालेज, राँची में हिंदी एवं संस्कृत विभाग का अध्यक्ष बनाया। बाद में जब उन्हें सुनने में परेशानी होने लगी तब उन्हें अध्यक्ष बनाए रखते हुए शिक्षण कार्य से मुक्ति दे दी ताकि वे अपनी रुचि के अनुसार शोधकार्य तथा अन्य लेखन कार्य कर सकें। बुल्के जी के नाम से वहाँ एक रिसर्च सेंटर बनाया गया जिसमें प्रारंभ में बुल्के जी के निजी पुस्तकालय की लगभग आठ हजार पुस्तकें थीं जो अब बढ़कर १५ हजार से अधिक हो गई हैं। भारत सरकार ने भी उन्हें केंद्रीय हिंदी समिति का सम्मानित सदस्य बनाया और हिंदी सम्बन्धी उनकी सेवाओं के लिए उन्हें १९७४ में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया पर फादर बुल्के तो पद, सम्मान, आर्थिक लाभ आदि से परे जाकर, (शायद मदर सुपीरियर के आशीर्वाद से ही), सही अर्थ में वीतराग 'संन्यासी' बन गए थे। नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (१९७५) में जब उन्हें 'विदेशी हिंदी साहित्यकार पुरस्कार' के लिए आमंत्रित किया गया, तो उन्होंने यह कहकर उसे लेने से मना किया कि मैं तो भारतीय हूँ, विदेशी नहीं। यह उनके भारतीयकरण का ही परिणाम था कि जब उन्हें कोई 'फादर' कहता था तो वे टोकते थे और कहते थे कि फादर नहीं 'बाबा' कहो। उनके विद्यार्थी उन्हें 'बाबा' ही कहते थे। उनके एक प्रशंसक ने लिखा-

रामकथा को तुमने दिए नवल नूतन आयाम।
रामकथा के उद्भट ज्ञाता बाबा बुल्के तुम्हें प्रणाम।।

सेवानिवृत्त अध्यक्ष, राजभाषा विभाग,
भारतीय स्टेट बैंक बैंक, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई
पी॰138, एम आई जी,
पल्लवपुरम फेज 2, मेरठ 250 110)

आपकी लोकप्रिय पत्रिका
सत्यार्थ सौरभ को सम्बल
प्रदान करने हेतु
आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
होशंगाबाद ने
संरक्षक सदस्यता (₹११०००)
ग्रहण की है।
अनेकशः धन्यवाद
- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	द्ध		२	र्प	२		३		ह्न ३	
	४	व		५	ह्मा		६	व	६	ज्ञ ६
७ अ		७ ष्वा	७				८	तृ	८ य	८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिस कर्म को श्रद्धापूर्वक किया जाय वह क्या कहाता है?
२. माता-पिता को प्रसन्न करने के अर्थ जो कार्य किए जाते हैं वे क्या कहाते हैं?
३. कौनसी सन्ध्या शास्त्रोक्त नहीं है?
४. विद्वानों को शतपथ ब्राह्मण में क्या कहा गया है?
५. चारों वेदों के ज्ञाता को क्या कहते हैं?
६. विद्वानों का संग करना किस यज्ञ के अन्तर्गत आता है?
७. विद्युत आदि पदार्थों के जानने वाले मनीषियों का क्या नाम है?
८. पितरों और माता-पितादि की सेवा किस यज्ञ के अन्तर्गत आती है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ८/१६ का सही उत्तर

१. होम	२. दशवें
३. आठवें	४. वेद
५. छठे	६. पुंसवन
७. समावर्त्तन	८. ओ३म्

"विस्तृत नियम पृष्ठ ०८ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०१६

समाचार

आर्य समाज टाण्डा का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज, टाण्डा के तत्वावधान में उक्त समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिनांक १० से १४ नवम्बर २०१६ तक मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत् के लगभग सभी संन्यासी, विद्वान्, विदुषियाँ एवं आर्य नेतागण भाग लेंगे। आर्य समाज टाण्डा का इतिहास स्वर्णिम तथा वर्तमान सक्रिय है। आर्य समाज, टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं स्वागताध्यक्ष श्री दीनदयाल जी गुप्त, कोलकाता होंगे। समारोह के अवसर पर सामवेद के बंग भाषानुवाद का लोकार्पण होने के साथ पंचयज्ञमहाविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थों का प्रकाशन किया जायेगा। आर्य जगत् के प्रख्यात् विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के मुख्य सम्पादकत्व में एक संग्रहणीय स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी। - पंडित दीनानाथ शास्त्री, संयोजक, मोबाइल ८००४८५८४१३

राष्ट्र रक्षा महायज्ञ एवं विराट कवि सम्मेलन

आर्य समाज, पश्चिम विहार, नई दिल्ली के भव्य सभागार में अध्यात्म पथ, मासिक पत्रिका द्वारा शहीदों की स्मृति में राष्ट्र रक्षा महायज्ञ, भजन संध्या, विराट कवि एवं योग सम्मेलन तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि उत्तरीय दिल्ली नगर निगम के महापौर डॉ. संजीव नैय्यर थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

- सूर्य कान्त मिश्र

जम्मू क्षेत्र के कठुआ आर्य समाज का १ मास के वेद प्रचार का हुआ भव्य समापन (१६ जुलाई से १५ अगस्त २०१६ तक हुई अमृत कथा)

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी एक महीने के वेद प्रचार मास का आयोजन श्रावण मास में रखा गया । श्री राजवीर सिंह आर्य, भजनोपदेशक मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) से पंजाब सभा के उपदेशक श्री विजय शास्त्री अमृतसर से और आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद मध्य प्रदेश से आमंत्रित किये गए। आचार्य आनन्द पुरुषार्थी के व्याख्यानों से नई पीढ़ी बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने रोज एक वेद मन्त्र की व्याख्या सुनाई और एक दिन सत्यार्थप्रकाश पर अच्छे से प्रकाश डाला। राष्ट्र भक्ति व आतंकवाद की तुलना के साथ ईश्वर के विभिन्न गुण, कर्म, स्वभाव की व्याख्या की। कार्यक्रम के संयोजक श्री भारत भूषण आनन्द (मुनिजी) ने सभी का धन्यवाद दिया। - गायत्री प्रसाद आर्य, पुरोहित एवं महामंत्री

शोक संवेदना

आर्य समाज डोहरिया अहीर के पुरोहित श्री नवरत्नमल शर्मा के पिता श्री सोहनलाल जी शर्मा का निधन ८२ वर्ष की अवस्था में १२ अगस्त २०१६ को हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से समस्त परिवार के प्रति शोक संवेदना सम्प्रेषित है। - भवानीदास आर्य, मंत्री न्यास

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज सेक्टर २२ ए, चण्डीगढ़ में ४ से १० जुलाई २०१६ तक श्रद्धेय स्वामी केवलानन्द सरस्वती आर्य वानप्रस्थ संन्यास आश्रम, ज्वालापुर के सान्निध्य में शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। स्वामी केवलानन्द जी द्वारा इस अवसर पर अष्टांगयोग पर प्रकाश डाला गया। प्रधान श्री सोमदत्त जी शास्त्री ने कुशलतापूर्वक मंच का संचालन किया।

दिनांक ५ से ११ सितम्बर २०१६ तक इसी आर्य समाज द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, डॉ. विक्रम कुमार विवेकी, डॉ. आनन्द कुमार एवं डॉ. शिवकुमार शास्त्री ने अपने उद्‌बोधनों का लाभ प्रदान किया। - सोमदत्त शास्त्री, प्रधान

कुष्ठ रोगी समाज के अभिन्न अंग - डॉ. आर.के. तंवर

कुष्ठ रोगी समाज के अभिन्न अंग हैं। उनकी सेवा सुश्रुषा करके आत्मिक शांति का अहसास होता है। समाज के सभी वर्ग समय-समय पर इनके बीच पहुँचकर इन्हें खुशी दे सकते हैं। उक्त विचार एमबीएस अस्पताल के कैंसर रोग विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. तंवर ने हरिओम् नगर कच्ची बस्ती में आर्य समाज जिलासभा की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महिलाओं को साड़ियाँ व खाद्यान्न सामग्री बाँटते हुए व्यक्त किये।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि रघुराज सिंह आर्य के परिवार की ओर से उपलब्ध साड़ियाँ एवं खाद्यान्न सामग्री कुष्ठ रोग बस्ती की महिलाओं को वितरित की गई।

- अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

राष्ट्रीय आर्य युवा महोत्सव का आयोजन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में ४ सितम्बर २०१६ को राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान ने की एवं ध्वजारोहण ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, श्री रुद्रसेन जी सिन्धु, श्री आनन्द चौहान सहित अनेक विद्वान् आर्य नेता व गणमान्यजन उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री सौरभ गुप्ता एवं सुमित टण्डन को आर्य युवा रत्न अवार्ड, श्रीमती मीना आर्या को आर्य महिला गौरव अवार्ड, ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र को पंडित लेखराम गौरव अवार्ड, श्री रवि चड्ढा एवं श्री विश्वनाथ आर्य को लाइफ टाइम एचीवमेन्ट अवार्ड, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार को वैदिक गौरव अवार्ड एवं श्री ओमप्रकाश अग्रवाल को आर्य श्रेष्ठी अवार्ड से अलंकृत किया गया।

- डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्री हरिसिंह जी आर्य की नवीं पुण्यतिथि पर 'वैदिक ज्ञान समारोह' का आयोजन

भारत एवं राजस्थान सरकार से सम्मानित श्री हरिसिंह जी आर्य, स्वतंत्रता सेनानी की नवीं पुण्यतिथि पर आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार,

जयपुर में 'वैदिक ज्ञान समारोह' का आयोजन 'सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर' की ओर से किया गया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि माननीय लोकायुक्त श्री एस. एस. कोठारी, श्री सुधीर पारीक, न्यायाधीश, सी.बी.आई; प्रो. रासासिंह रावत, पूर्व सांसद अजमेर एवं श्री गोविन्द पारीक निदेशक, जनसम्पर्क अधिकारी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय श्री एम. एल. गोयल, निदेशक डी.ए.वी. संस्थाएँ (राज.) ने की।

कार्यक्रम की संयोजिका सरोज वर्मा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम वर्ग में सुश्री प्रियांशी मीणा, मध्यम वर्ग में सुश्री प्रियंका प्रजापत, वरिष्ठ वर्ग में विकास कुमार प्रथम रहे।

तीन वर्गों में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को क्रमशः १५०० रु., ७५० रु. एवं ३५० रु. के नकद पुरस्कार, प्रत्येक वर्ग में १००-१०० रु. के दो-दो सान्त्वना पुरस्कार एवं विद्यालय स्तर पर एक-एक पुरस्कार प्रदान कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया गया। विशिष्ट अतिथि माननीय लोकायुक्त श्री एस. एस. कोठारी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि अच्छे जीवन निर्माण में वेदों की आचार संहिता का पालन अनिवार्य है तथा इसको व्यवहार में लाने पर ही दयानन्द, श्रीकृष्ण, श्री राम जैसे महापुरुषों के गुणों को जीवन में समन्वित कर पाओगे।

कार्यक्रम के अन्त में न्यास के मंत्री श्री ओ.पी.वर्मा ने सभी का धन्यवाद किया।

– ओ. पी. वर्मा

शराब बंदी अभियान को लेकर आर्य समाज द्वारा चलायी जा रहीं मुहिम को व्यापक जनसमर्थन मिला है, मुख्यमंत्री को भेजे गये हजारों पोस्टकार्ड में आर्य समाजियों ने प्रदेश में शराब बंद करने की पुरजोर माँग उठाई। समाज ने वेद प्रचार सप्ताह के तहत गाँव-गाँव कई कार्यक्रम कर लोगों को अपने साथ जोड़ा वहीं यज्ञ, हवन के माध्यम से अपनी माँग को दृढ़ता से उठाने का आह्वान किया।

– चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान

प्रदूषण निवारण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज, हिण्डौनसिटी के तत्वावधान में २६ अगस्त से ३ सितम्बर २०१६ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक एवं श्री भानुप्रकाश शास्त्री के उद्‌बोधन उपस्थित श्रोताओं को सुनने को मिले। समारोह में आई.ए.एस. में चयनित डॉ. श्रीमती कविता को चतुर्दश कल्पना चावला पुरस्कार तथा आई.ए.एस. में ही चयनित श्री सौरभ कुमार अग्रवाल को द्वितीय वल्लभ भाई साहब पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

– रामबाबू आर्य, मंत्री

माता लीलावन्ती सभागार में आचार्य आनन्द पुरुषार्थी का प्रवचन

न्यास द्वारा प्रत्येक माह को आयोजित किए जाने वाले सत्संग में इस

बार श्रोताओं से भरे हुए सभागार को होशंगाबाद से पधारे विद्वान् आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने सम्बोधित किया और कहा कि सूर्य और चन्द्र का अनुकरण करते हुए मानव को अपने जीवन को पूर्णता की ओर ले जाना चाहिए। डिजिटल माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को प्रस्तुत किए जाने के अभिनव प्रकल्प के अंतर्गत न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में उपस्थित ऋषि के वाक्य कि 'जन्मपत्री नहीं शोक पत्री है' की भूमिका मात्र स्लाइड शो के माध्यम से प्रस्तुत की जिसका पूरा व्याख्यान आगामी सत्संग में किया जायेगा। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री भूपेन्द्र आर्य ने किया। इससे पूर्व न्यास के मंत्री भवानी दास आर्य ने आचार्य जी का स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया के धन्यवाद ज्ञापन व पुरोहित श्री नवनीत आर्य के शान्ति पाठ तथा प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

– नारायणलाल मित्तल, कोषाध्यक्ष-न्यास

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज, केसरपुरा रोड शिवगंज के तत्वावधान में ६ सितम्बर से १२ सितम्बर २०१६ तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा पंडित सुरेश जी जोशी थे साथ ही आदित्य ब्रह्मचारी मनुदेव जी एवं रुक्मिणी जी जोशी के उद्‌बोधनों का लाभ श्रोता समाज ने उठाया।

– लक्ष्मीनारायण गहलोत, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ८/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ८/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- वैद्या श्रीमती आशा भूषण (भारती); (बिहार), श्री हर्षवर्द्धन कुमार आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री किशनाराम आर्य; बीलू (नागौर), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; बेरगनिया (बिहार), श्री रमेश आर्य; दीनानगर (पंजाब), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री मुकेश पाठक; उदयपुर (राज.), सुनिता भदौरिया; ग्वालियर (म.प्र.), मीना वासुदेव भाई ठककर; डिसा (गुज.), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुज.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरि.), श्री अमित कुमार; झुन्झुनु (राज.), श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुज.), श्री गोवर्धन लाल झवर; आष्टा (म.प्र.), श्री नारायण लाल राव; उदयपुर (राज.), श्री जगदीश प्रसाद हरीत; नीमच (म. प्र.), श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ. प्र.), श्री पृथ्वी वल्लभ देव सोलंकी; उज्जैन(म. प्र.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; शाहपुरा (राज.), श्री महेशचन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नए नियम पृष्ठ ०८ पर अवश्य पढ़ें।

शहद और स्वास्थ्य

गतांक से आगे ....

६. शहद एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक है- शहद का सेवन लाभदायक है। यह एंटीआक्सीडेंट तत्वों की संख्या को बढ़ाता है, शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाता है और हानिकारक सूक्ष्मजीवों से लड़ता है। कई अध्ययनों में जख्मों की चिकित्सा में भी शहद के इस्तेमाल पर विचार किया गया है। एक अध्ययन में एक उपचारात्मक शहद का इस्तेमाल किया गया जो एक खास शुद्धिकरण प्रक्रिया से गुजरा था। इस अध्ययन में भाग लेने वाले सभी लोगों के जख्मों से सारा बैक्टीरिया नष्ट हो गया। एक और अध्ययन में असंसाधित (अनप्रोसेस्ड) शहद के इस्तेमाल से ५९ मरीजों के जख्म और पैर के अल्सर ठीक हो गए। इन मरीजों में से ८० फीसदी पर पारंपरिक उपचार का कोई असर नहीं हुआ था। एक मरीज को छोड़कर बाकी सभी के जख्मों में सुधार हुआ। साथ ही शहद लगाने के एक सप्ताह के भीतर संक्रमित जख्म जीवाणुरहित हो गए। पारंपरिक चिकित्सा में, शहद के एक लाभ में श्वास संबंधी संक्रमणों का उपचार शामिल है।

क्लीनिकल रिसर्च से यह भी पता चला है कि मेडिकल ग्रेड शहद भोजन से पैदा होने वाले जीवाणुओं जैसे ई-कोलाई और सेलमोनेला को नष्ट कर सकता है। शहद उन बैक्टीरिया से लड़ने में भी प्रभावकारी साबित हुआ है, जिन पर एंटीबायोटिक्स का असर नहीं होता। शहद कई स्तरों पर संक्रमण से लड़ता है जिससे वह जीवाणुओं के लिए प्रतिरोधी क्षमता विकसित करना मुश्किल बना देता है। इसके विपरीत एंटीबायोटिक्स बैक्टीरिया पर उस समय हमला करते हैं, जब वे विकसित हो रहे होते हैं इससे वे उसे प्रतिरोधी क्षमता विकसित करने का मौका देते हैं।

७. शहद दिल की देखभाल में फायदेमंद- एक अनार का ताजा रस लेकर उसमें एक बड़ा चम्मच शहद मिलाएँ। रोजाना सुबह खाली पेट लें।

खजूर में सुई चुभाते हुए उसमें छेद करें। उसे शहद में डुबा दें और दिन में दो बार २-४ खजूर खाएँ।

८. सर्दी जुकाम के लिए शहद के उपचार- अगर आप सर्दी-जुकाम से जुड़ी बीमारियों से पीड़ित हैं या आपको हर सुबह बंद नाक से जूझना पड़ता है, तो नीम, काली मिर्च, शहद और हल्दी का सेवन काफी फायदेमंद हो सकता है। यहाँ कुछ सरल उपचार दिए गए हैं-

विकल्प १: काली मिर्च के 10 से 12 दानों को दरदरा कूट लें और उन्हें दो छोटे चम्मच शहद में रात भर भिगो कर रखें। सुबह खूब अच्छी तरह चबाते हुए काली मिर्च के दाने खा लें। आप शहद में थोड़ा हल्दी भी मिला सकते हैं।

विकल्प-२: नीम के पत्तों का पेस्ट बना लें और उस पेस्ट से एक कंचे के आकार की गोली बनाएँ। उस गोली को शहद में डुबाकर हर सुबह खाली पेट निगल लें। अगले ६० मिनट तक कुछ न खाएँ ताकि नीम आपके शरीर में फैल जाए। इससे दूसरी तरह की एलर्जी जैसे त्वचा या किसी खाद्य पदार्थ से होने वाली एलर्जी में भी लाभ मिलता है। नीम में बहुत से औषधीय गुण हैं और यह आदत बहुत ही लाभदायक है। अगर आपको नीम के सामान्य पत्ते ज्यादा कड़वे लगते हैं, तो नीम के कोमल पत्तों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

९. शहद एक बलवर्धक खाद्य पदार्थ (एनर्जी फूड) है- पारंपरिक औषधि में शहद का एक महत्वपूर्ण प्रयोग त्वरित बलवर्धक के रूप में किया जाता है। जैसा कि पहले भी जिक्र किया गया है, शहद में अलग-अलग तरह के शुगर कण होते हैं, खासकर ग्लूकोज और फ्रक्टोज। हालाँकि सफेद चीनी, जिसमें फ्रक्टोज और ग्लूकोज एक साथ सुक्रोज के रूप में होते हैं, इसके विपरीत शहद में ये दोनों शर्कराएँ अलग होती हैं। इसलिए शहद तत्काल शक्ति देता है।

'संयुक्त राष्ट्र राष्ट्रीय शहद बोर्ड' शहद के सेवन का सुझाव देता है क्योंकि इसमें कम मात्रा में बहुत से विटामिन और मिनरल होते हैं। इनमें कैल्शियम, कापर,

आयरन, मैगनीशियम, फासफोरस, पोटैशियम और जिंक शामिल हैं।

१०. शहद पाचन में मदद करता है- शहद कब्ज, पेट फूलने और गैस में लाभकारी होता है क्योंकि यह एक हल्का लैक्सेटिव है। शहद में प्रोबायोटिक या सहायक बैक्टीरिया भी प्रचुर मात्रा

में होते हैं जो पाचन में मदद करते हैं, प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाते हैं और एलर्जी को कम करते हैं। टेबल शुगर की जगह शहद का इस्तेमाल आंतों में फंगस से पैदा हुए माइकोटाक्सिन के विषैले प्रभावों को कम करता है।

११. शहद त्वचा और सिर की खाल के संक्रमणों से लड़ता है- त्वचा और सिर की खाल के लिए भी शहद बहुत फायदेमंद होता है। ३० मरीजों पर किए गए एक छोटे स्तर के अध्ययन, जिसमें सेबोरिक डर्माटाइटिस और रूसी के उपचार पर शहद के प्रभावों की जाँच की गई थी, इसमें प्रतिभागियों ने हर दूसरे दिन २-३ मिनट तक अपने समस्याग्रस्त क्षेत्रों पर पतले अपरिष्कृत (अनप्रोसेस्ड) शहद से हल्की मालिश की। शहद को तीन घंटे तक छोड़ दिया गया, फिर गुनगुने पानी से धो दिया गया। सभी मरीजों को इस उपचार से लाभ दिखा। एक सप्ताह के भीतर खारिश में राहत मिली और स्केलिंग गायब हो गई, दो सप्ताह में जख्म गायब हो गए। मरीजों के बाल गिरने की समस्या में भी सुधार आया। इसके अलावा जिन मरीजों ने सप्ताह में एक बार शहद लगाते हुए छह माह तक उपचार जारी रखा, उन्हें यह समस्या दोबारा नहीं हुई।

१२. शहद बच्चों को गहरी नींद सोने में मदद करता है- कई अध्ययनों के शुरुआती नतीजे दर्शाते हैं कि शहद से बच्चों की नींद गहरी हो सकती है। माता-पिता की राय पर आधारित इस अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया कि शहद से रात के समय बच्चों में खांसी कम हुई और उन्हें अधिक गहरी नींद सोने में मदद मिली।

- साभार- sadhguru.org

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

भगवद् कृपा से महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का हृदय स्थल गुलाब बाग, नवलखा महल देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उदयपुर आने वाले लोगों के लिए इसे और भी रोचक स्थल बनाया जावे।

- ओमप्रकाश आर्य, चुरु

नवलखा महल वर्तमान व आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ज्ञान स्थल है जो प्राणी मात्र को सत्य की राह दिखाता है।

- पुनीत दीक्षित, गाजियाबाद

विशेष बात इस आर्ट गैलेरी में वैसे सभी कुछ बहुत ही सुन्दर रहा। मगर जो सबसे बेहतरीन विषयवस्तु लगी वह यह कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन को फोटो एवं चलचित्र के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है वह बहुत ही काबिले तारीफ है।

- अमित कुमार चौबे, गोरखपुर

इस आर्ट गैलेरी में दर्शायी गई हर एक चित्र और जानकारी से हमें काफी कुछ सीखने व जानने का अवसर प्राप्त हुआ और हमारे इतिहास के बारे में कई जानकारियाँ ऐसी मिली जिसे जानकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैं यहाँ के कार्यकर्त्ताओं को दिल से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमारी संस्कृति को बचा कर रखा है।

- विशाल कुमार, कोटा

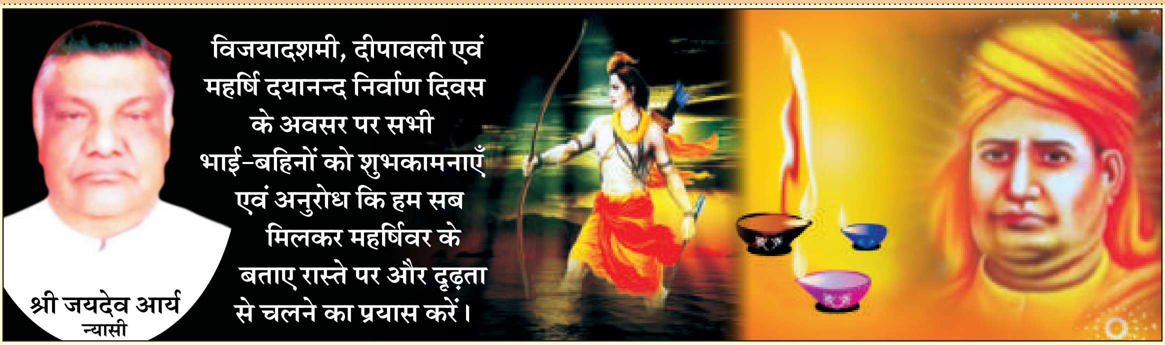

कथा सरित

बाहरी दिखावे में नहीं, आंतरिक मज़बूती में ही होती है वास्तविक सुरक्षा

सीताराम गुप्ता

कौओं का एक जोड़ा कहीं से उड़ता हुआ आया और एक ऊँचे से पेड़ पर घोंसला बनाने में जुट गया। कौओं को इस पेड़ पर घोंसला बनाते देख एक चुहिया ने उनसे कहा, ''देखो भाई यहाँ घोंसला मत बनाओ। यहाँ घोंसला बनाना सुरक्षित नहीं है।'' चुहिया की बात सुनकर कौओं ने कहा कि घोंसला बनाने के लिए इस ऊँचे पेड़ से ज़्यादा सुरक्षित स्थान कौन-सा होगा? चुहिया ने फिर कहा, ''देखो भाई ऊँचा होते हुए भी यह पेड़ सुरक्षित नहीं है। इसकी...।'' चुहिया अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि कौओं ने बीच में ही चुहिया को रोककर डाँटते हुए कहा कि हमारे काम में दख़ल मत दो और अपना काम देखो। हम दिन भर जंगलों के ऊपर उड़ते रहते हैं और सारे जंगलों को अच्छी प्रकार से जानते हैं। तुम ज़मीन के अंदर रहने वाली नन्हीं सी चुहिया पेड़ों के बारे में क्या जानो? ये कहकर कौए पुनः अपना घोंसला बनाने में व्यस्त हो गए।

कुछ दिनों के परिश्रम से कौओं ने एक अच्छा घोंसला तैयार कर लिया और मादा कौए ने उसमें अण्डे भी दे दिये। अभी अण्डों से बच्चे निकले भी न थे कि एक दिन अचानक आँधी चलने लगी। पेड़ हवा में ज़ोर-ज़ोर से झूलने लगा। आँधी का वेग बहुत तेज़ हो गया और देखते-देखते पेड़ जड़ समेत उखड़कर धराशायी हो गया। कौओं का घोंसला दूर जा गिरा और उसमें से अण्डे छिटक कर धरती पर गिरकर चकनाचूर हो गए। कौओं का पूरा संसार पल भर में उजड़ गया। वे रोने-पीटने लगे। यह सब देखकर चुहिया को भी बड़ा दुख हुआ और कौओं के पास आकर बोली, ''तुम समझते थे कि तुम पूरे जंगल को जानते हो लेकिन तुमने पेड़ को केवल बाहर से देखा था। पेड़ की ऊँचाई देखी थी जड़ों की गहराई और स्वास्थ्य नहीं देखा। मैंने पेड़ को अंदर से देखा था। पेड़ की जड़ें सड़कर धीरे-धीरे कमज़ोर होती जा रही थीं और मैंने तुम्हें बताने की कोशिश भी की लेकिन तुमने मेरी बात बीच में ही काट दी और अपनी ज़िद पर अड़े रहे। इसलिए आज ये दिन देखना पड़ा।''

किसी चीज़ को केवल बाहर से जानना ही पर्याप्त नहीं होता अपितु अंदर से जानना भी ज़रूरी है। जो चीज़ भीतर से सुरक्षित नहीं वह बाहर से कैसे सुरक्षित होगी? यही बात मनुष्य के संदर्भ में भी कही जा सकती है। मनुष्य की मज़बूती मात्र उसके भौतिक शरीर में नहीं अपितु उसके मनोभावों में है। यदि मनुष्य भीतर से कमज़ोर है अर्थात् उसका मन यदि विकारों या नकारात्मक भावों से भरा है तो एक दिन ये शरीर भी अनेक व्याधियों का शिकार होकर कमज़ोर जड़ वाले पेड़ की तरह शीघ्र ही नष्ट होकर धराशायी हो जाएगा। ज़रूरी है कि हम स्वयं को अंदर से मज़बूत बनाने का प्रयास करें। इसके लिए हमें शरीर को कमज़ोर करनेवाले मनोभावों अर्थात् विकारों से पूरी तरह से मुक्ति पानी होगी। अष्टांग योग के निरंतर अभ्यास द्वारा हम न केवल भौतिक स्वास्थ्य ठीक कर सकते हैं अपितु आंतरिक विकास का भी यही एकमात्र उपाय है।

- डी. १०६-सी, पीतम पुरा
दिल्ली- ११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३

सत्यार्थ-पीयूष

प्रमुखतम राजपुरुषों की योग्यता

जो पवित्र आत्मा, सत्याचार, सत्पुरुषों का संगी यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलने वाला श्रेष्ठ पुरुषों से युक्त बुद्धिमान है, वही न्यायरूप दण्ड के चलाने में समर्थ होता है। मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश और प्रधान अर्थात् राजा, ये चार सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान् होने चाहिए। (सत्यार्थ प्रकाश ६ समुल्लास) (राजा की योग्यता का आगे विशिष्ट वर्णन किया जायेगा।)

स्पष्ट है कि यहाँ विषय की विशेषज्ञता के साथ उच्च चारित्रिक मापदण्ड स्थापित किये हैं। ये निर्वाचन Moral and intellectual Merit पर होंगे। दुःख का विषय है कि आज इस दृष्टिकोण को बिल्कुल भुला दिया गया है। तभी स्वर्णिम वर्ण व्यवस्था भ्रष्ट होकर जन्मगत जाति-व्यवस्था में बदल गयी है। जिसका दोहन आज के राजनीतिज्ञों द्वारा किया जा रहा है। जनतंत्र-भीड़तंत्र में बदल गया है। शायद ऐसे ही योग्यता-निरपेक्ष गणतंत्र के बारे में चर्चिल का मजबूरी प्रदर्शित करता हुआ कथन है कि ''गणतंत्र एक अति खराब शासन है, किंतु उससे भिन्न कोई भी शासन उत्तम विवेचित नहीं हो सकता है।'' अरस्तु के शब्दों में- ''प्रजातंत्र मूर्खों की सरकार है''। बर्नाड शा कहते हैं- ''डेमोक्रेसी (लोकतंत्र) डेमनक्रेसी (राक्षसतंत्र) बन गई है।'' प्रजातंत्र के विषय में अथर्ववेद १२/३/१० में प्रांजल भाव में वर्णित है 'प्र-प्रकृष्ट-उत्तम, जा= संतान अर्थात् उत्तम सन्तानों (व्यक्तियों) द्वारा निर्वाचित, उत्तम सदस्यों द्वारा शासित शासन पद्धति को प्रजातंत्र शासन पद्धति कहा जाता है। वस्तुतः महर्षि दयानन्द ने जिन राजनीतिक सिद्धान्तों का वर्णन किया है (योग्यता सापेक्ष प्रजातंत्र सहित) उनको समग्र रूप में स्वीकार कर प्राचीन भारत में अनेकों, महाराज अश्वपति, श्रीराम आदि राजा हुए हैं, जो प्रजावात्सल्य के गुणों के कारण, प्रजा की चतुर्दिक उन्नति के कारण, सदैव प्रशंसित रहे हैं। और ऐसा आज भी हो सकता है बशर्ते राजनीति में धर्म (मानवीय मूल्यों) का प्रवेश हो अन्यथा आज संसद में जिस प्रकार के चरित्रों का बाहुल्य है उनके बारे में अधिक लिखना भी व्यर्थ है सुधी पाठक परिचित हैं।

आज हमारे राष्ट्र की स्थिति किसी से छुपी हुई नहीं है। चारों और भ्रष्टाचार और अनाचार का बोलबाला है। बड़े-बड़े नेता किसी न किसी घोटाले में फँसे हुए हैं। उनके विरुद्ध दोष सिद्ध हो जाने के बावजूद भी उन्हें दण्ड नहीं मिल पाता है जिससे आम जनता भी भ्रष्टाचार में पूरी तरह से डूब चुकी है। कभी विश्व गुरु कहलाने वाले भारत की पहचान आज एक भ्रष्टाचारी राष्ट्र के रूप में हो गई है। इसका कारण धर्मविहीन (मानवीय मूल्यों से रहित) राजनीति ही है।

प्रजातंत्र का परीक्षण अमरीका में पिछले लगभग ३०० साल से हो रहा है। वहाँ के विचारक अब इस परिणाम पर पहुँचे हैं ''यदि प्रजातंत्र को सफल बनाना है तो उसको मूर्खों से सुरक्षित रखना होगा''। उनका यह भी कहना है कि ''प्रजातंत्र वहीं फलीभूत होता है जहाँ चरित्र का समावेश होता है।''

महर्षि ने राज्य व्यवस्था चलाने के लिए राजा का अपना चरित्र एवं व्यवहार कैसा होना चाहिए तथा उसकी सभा समितियाँ और उन समितियों के कर्मचारियों आदि में किस प्रकार के गुण होने चाहिए इन सब बातों पर मनन और चिन्तन करके सारी व्यवस्था का खुलासा हमारे सामने रखा है। जब तक राजा और अन्य कर्मचारियों का चरित्र और व्यवहार, धार्मिकता से परिपूर्ण नहीं होगा तब तक सुराज्य व्यवस्था की कल्पना हम नहीं कर सकते हैं। 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति वास्तव में बहुत ही व्यावहारिक है और महर्षि के चिन्तन में भी हमें यह बात परिलक्षित होती है।

''प्रजातंत्र वही फलीभूत होता है जहाँ चरित्र का समावेश होता है।''

हमने देखा कि महर्षि ने सभासदों व राजा के लिये उच्चतम योग्यता मापदण्ड निर्धारित किए हैं। ये सभाऐं ही सभी नियमों का निर्धारण करेंगी। फिर भी यदि कभी असमंजस की स्थिति आए तो एक अकेले संन्यासी (यह आजकल के गेरुआवसन धारी तथाकथित संन्यासी नहीं, वरन् सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास में वर्णित तीनों प्रकार की एषणाओं को त्याग, मोक्षमार्गी, वेदज्ञ संन्यासी के बारे में है) की सम्मति सर्वश्रेष्ठ है।

वे लिखते हैं- ''यदि एक अकेला सब वेदों का जानने हारा द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि अज्ञानियों के सहस्रों लाखों करोड़ों मिलके जो कुछ व्यवस्था करें उसको कभी न मानना चाहिये।''(सत्यार्थ प्रकाश ६ समु.)

सम्पादक- अशोक आर्य

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE
ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANISATION
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

अज्ञानी लोग..... डोरा, धागा आदि मिथ्या मंत्र-यंत्र बाँधते-बँधवाते फिरते हैं। अपने धन का नाश, सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ाकर दुःख देते फिरते हैं।

सत्यार्थप्रकाश पृ. ३०-३१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर